भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 01 | उदयपुर रविवार 15 जनवरी 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

प्रतीकों में जीता मनुष्य स्वयं प्रकृति है

प्रतीक का सामान्य अर्थ दूसरों का रूप धरना, स्वांग भरना, प्रतिरूप बनना तथा असल की नकल उतारना है। इस दृष्टि से लोक-प्रतीक मानवीय जीवनधर्मिता, लोकमान्यता तथा लोकानुरंजन के सरस स्वरूप, चेतन के प्रतिरूप, कल्पनाजनित रूपांकनों के लौकिक-अलौकिक मनोभाव, श्रद्धा-आस्था के सुखदा अलंकरण तथा पूर्वजन्म से पुनर्जन्म को संबल देते हमारी सहकारिता, सहिष्णुता, भागीरथता एवं समता-समानता के उपजीव्य दस्तावेज हैं। इनके बिना जीवन अधूरा है।

किसी ने ठीक ही कहा है- मैं तुम्हें प्रतीकों में ढूंढता हूं। तुम मुझे तरीकों में तलाशते हो। यह ढूंढ और तलाश हमारे अन्तर और बाह्य की सनातनता का सेतु-शिखर है। मेरे प्रतीक! तुम मुझे स्मृतियों में सहलाते हो। शेषत्व में अपनत्व भरते हो। क्षणिकाओं में अक्षुण्ण बनकर आते हो और कण-कण में कणिका बन बूंद से समुंद होने का होनहार बनते हो।

सारा संसार ही प्रतीकों का पड़ाव लिए है। मकड़ी की तरह मनुज प्रतीकों का जाल बुनता है। प्रदर्शनधर्मी कलाओं में कठपुतली असल की नकल तथा नकल की असल का भान कराती जिस खूबसूरती से अस्थिर चलायमान होती है, वह कल्पनातीत है। चलायवान के अदृश्य हाथों दृश्य भावों की स्वप्निल अभिव्यक्ति देने वाली धागा पुतली ने ही रूमानिया के अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में कमाल का कौशल दिखा पूरे विश्व को अपनी मुट्ठी में बांध लिया था।

अपने स्वांग में बहुरूपिया हथेली पर घोड़ा नचाता कहता है- ''यह काठियावाड़ी घोड़ा। देव-रूप, बे-रूप घोड़ा। बे-लाख का घोड़ा। घोड़ा हवा के माफिक दौड़ता है। घास नहीं खाता। पानी नहीं पीता। जलेबी का नाश्ता करता है।'' कठपुतली खेल में 'घुड़लो कियां पलाण्यो राज' गीत पर घोड़ा आकाश से सर्र से उतरकर नाच के हिलोरे खाता फर्र से अदृश्य हो जाता है। गवरी में भंवरा दानव काली पोशाक और कोयले के घोल से पुते चेहरे से बड़ी-बड़ी आंखें निकाल कोहराम मचा देता है और लंबी-लंबी घास से पूरे शरीर को ढक खड़ल्या भूत सबको चकित करता विकराल भंगिमाओं में भागता नजर आता है।

बारहों मास व्रत कथा अनुष्ठानों में दीवाल पर विविध देव-देवियों के अंकन बिंदियों, रंग-रेखाओं तथा आकृतियों में पूरा ही आस्थानिष्ठ प्रतीक भाव परिलक्षित होता है। मोटे रूप में दो बिंदियां भाई दूज की, पांच नागपंचमी की, छह छठी माता की, सात शीतला सप्तमी की, नौ दीयाड़ी नम की, दस दशामाता की प्रतीक होती हैं।

आड़ी-टेढ़ी हवा में लहराती रेखाएं हाथ-पांव तथा शरीर को संकेतित करती हैं। मारवाड़ में हरिये गोबर से बनाये जाने वाले गोगा चित्र प्रागैतिहासिक चित्रों की याद दिलाते हैं। धड़ के रूप में गोलाई और उसमें आंखें दिखाती दो बिंदयां, कान-नाक-मुंह के कोई संकेत-चिन्ह नहीं। धड़ को स्पर्श करती लंबी लकीरें गोगाजी की सूचक, धड़ से लगी दोनों ओर उपर जाती आकाशगामी रेखाएं हाथों की प्रतीक तथा नीचे मोड़ खाती पांवों की प्रतीक बन गांव-गांव गोगा की गर्वोक्ति दिलाती हैं।

बरसात नहीं होने पर बालिकाएं घर-घर कवेलू में गोबर की मेढ़की घुमाती हैं। हर घर मेढ़की को पानी और बालाओं को मुट्ठीभर चनाचबैना देता है। इन्द्र-इन्द्राणी पर कुपित होते उनके उल्टे चित्रांकन बनाये जाते हैं। इन्द्र को बरसने के लिए महिलाएं बीजुराणी से मान-मनावण-मनुहार करती हैं। बीजुराणी उनके गुजरात से लौटने पर भेजने को कहती है। इधर इन्द्र राजा के लिए बीजुराणी के स्वागत में छालरी गाय के दूध में खीर पकाई जाती है।

बाखड़ी भैंस के दूध से पांव प्रक्षालन करने, कच्चे नारियल की चटकों वाली सोलमी लपसी बनाने, पचास पापड़ तलने, हरे मूंग के उजले चावल रंधवाने, लोंग सुपारी डोडा पान तथा मिश्री खांड के मुठिये लड्डू बनाने की तैयारी की जाती है। बीजुराणी यह सूचना पाकर इन्द्र राजा को भेजती है। अंत में मेहबाबा रीझता है और 'झिरमिर-झिरमिर मेहुड़ो बरसे' जैसे गीतों की गंगाएं छलक पड़ती हैं तब गीत शुरू होता है- 'मेह बाबा आ जा, घी नै रोटी खा जा।'

मेहदी तो पूरी ही प्रतीकों से अटीपटी है। इसका नाम ही मेह ने दी सो मेहदी पड़ा। बरसते मेह में इसका झाड़ फलता-फूलता है। मेहदी के अंकनों में इसीलिए बूंदों, बूंटों, लहरों, हिलोरों, झाड़-पत्तों का आधिक्य मिलता है। यह प्रेम की सूचक है। रसाचार्यों ने तो नौ रसों में प्रेम को रस नहीं माना किंतु मेहदी ने तो लोक में सर्वत्र ही प्रेम रस को रंगा पंगा किया।

कई गीत हैं इसके साक्षी- प्रेमरस मेहदी राचणी, बनो मेहदी सो राचणो राखूं मुट्ठी मांय, भंवर पल्लो छोड़ दो म्हारे हाथां में रच रई मेहदी, मेहदी बोई मालवे ईंको रंग गयो गुजरात, इसीलिए मेहदी सोने की सिलपट्टी पर बंटती है। महीन-महीन मखमल से छनती है और रतन कटोरे में गंगाजल के साथ ओलीघोली जाती है। मेहदी की महिमा में- 'चिरमी चुप व्है बैठगी या तो लाल रई सरमाय, हार गयो छै हिंगलू, लाज्यां मरै सिन्दूर, कंकू रो कई रंग है मेहदी सुरंगे रंग।'

विवाह जीवन का 'वाह' है। इस अवसर पर कई तरह के राग-रंग देखने को मिलते हैं। भित्तिचित्रों में वृक्षों, जानवरों, देवी-देवताओं तथा मनुष्यों के, बरात के लाड़ा-लाड़ी के चित्रों की बहार के साथ-साथ नये बने ब्याई-ब्याण के प्रतीक चित्र बड़े चित्ताकर्षक तथा अर्थ-गांभीर्य लिए होते हैं। मुख्यत: ब्याईजी को घट्टी फेरते और ब्याणजी को उन्हें मूसल से धमकाते हुए बताकर अच्छी खासी खबर ली जाती है। इसी प्रकार कई जातियों में शंखाढाल के माध्यम से मृतक को सद्गति देने के भाव-चित्र अनुष्ठानपूरित होते हैं।

बारात प्रस्थान के पश्चात रात्रि को वर पक्ष की महिलाओं द्वारा विविध स्वांग प्रदर्शनों की झड़ी लग जाती है तब श्लील-अश्लील प्रहसन-संवादों की गंगा-जमुनी धाराएं जिन रूपों में प्रस्फुटित होती हैं, पुरूष समाज उनका रसास्वादन करने को वर्जित रहता है। मैंने अपने अध्ययन के दौरान 40 से अधिक प्रहसनों के रूपों-प्रतिरूपों का अध्ययन किया है जिनमें महिलाओं की रचनाधर्मिता, कला-कौशल, प्रस्तुतिजन्य उन्मुक्त मनोभावों का सर्वथा खुला मनोनुरंजन देख दांतों तले अंगुली दबाने को विस्मित विवश होना पड़ता है। ऐसे प्रहसन कहीं टूंटिया-टूंटकी तो कहीं ख्याल-झामटड़े कहलाते हैं।

राजस्थान में विविध अंचलों में रात-रात भर लोककलाकारों द्वारा जो ख्याल प्रदर्शित किये जाते हैं वे कई रंगतों, शैलियों, रामतों, रम्मतों के दरसाव होते हैं। ऐसी अनेक मंडलियां भी रहीं जो राजस्थान के बाहर भी गई और वहां भी अपनी छाप छोड़ी। मेलोठेलों में ऐसी अनेक रचाल-पुस्तकें खरीदने वाले शौकिया लोग मिलेंगे। मेरे निजी संग्रह में भी ऐसे ख्यालों का जखीरा संग्रहीत है। कुछ तो सौ वर्ष से भी अधिक पुराना है।

राजस्थान के अलावा मुंबई इनका मुख्य प्रकाशन स्थल रहा। अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं। अब तो वैसी छपाई और चित्र भी कहीं देखने को नहीं मिलते। इन ख्यालों की विषयवस्तु तथा बणगट वे ही लोकसंगत-असंगत विषय, पात्र, परिवेश तथा जिन्दादिली जनित जोखिम झेलते शौर्य, संघर्ष, समर्पण और तलवार की धार देते पणयन हैं जो अंत में आदर्श के सबब बनते हैं। ये ख्याल तत्कालीन समाज, संस्कृति तथा जीवन-सरोकारों के अनेक गवाक्षों के साक्षी बन नाना संकेतों, इशारों और भावों के रूपांकनों को अभिव्यक्ति कर समुंद का साहचर्य कराते हैं। ऐसी रंगीनियों का रंगरेज राजस्थान ही कहा गया है।

होली गणगौर का उत्सव भी ऐसा ही रंग भरा मनता है। देवी-माता के रूप में इनका आह्वान सबमें हर्ष और उल्लास की फुटरी अभिव्यक्ति देता है। गीतों में इनका मानवीकरण देखते ही बनता है। इनके लिए चोटी से एड़ी तक के विविध आभूषणों की बहार गाई जाती है। होली का डांडा ही पूरा प्रतीकात्मक छवि लिए है।

सेमल वृक्ष पूरा ही गुम्मटी नोक लिए कांटेनुमा होता है। माना जाता है कि अग्नि में प्रवेश करने पर होलिका का पूरा शरीर फफोलेमय हो गया था। वही रूप होली-वृक्ष के रूप में प्रस्फुटित होकर होलिका रूप में अग्नि भेंट किया जाता है। बालिकाएं गोबर-बडुल्लों-बड़कुलों के रूप होली के नाना आभूषण बना माला-रूप में होली को पहनाती हैं। उसी होली की राख के प्रतिदिन सुबै पिंड बनाकर सौलह दिन तक पूजा करती हैं। यही पिंड-रूपा होली शोडषी के रूप में गौर-गौरी-गणगौर के रूप में पूजी जाती है।

राजस्थान में सर्वत्र ही होली के हजार रंग लोकानुरंजन के सशक्त माध्यम बने हैं। गणगौर की पूजा काष्ठरूप की आकृतियों के अलावा फूल-पत्तों-टहनियों के रूप में भी आदिवासी समाज में बड़े कलात्मक रूप से विशेष अनुष्ठान के साथ देखने को मिलती है। विविध अंचलों में इनकी सवारियां, स्वांग, गैर, घूमर तथा हुड़दंग पूरे विश्व को चकित करने वाले हैं।

किसने देखा होली को, गणगौर को, छठी को और उन अगणित देवी-देवताओं को जिनके प्रति हर जन, हर मन, आस्था-श्रद्धा से अभिभूत रहता है। स्वांस-स्वांस में इनका वास बना रहता है। सामान्य से असाध्य रोग इनकी शरण से दूर होते हैं।

जीवन-मरण की समग्रता से हमारा इनसे जुड़ाव सदैव अटूट बना रहता है और अनास्थावान-अविश्वासी भी टूट-हार कर अंत में इनकी शरण पकड़ता है। कहा तो यह भी जाता है कि अंतिम स्वांस भी ऐसे लोगों की तब ही निकलती है जब वे इनके प्रति श्रद्धावान बनते हैं।

एक देवता अनेक नाम, रूप, रंग, आकार, प्रकृति और परंपराओं से बंधकर अपनी सत्ता, महत्ता, पहचान तथा परचम देता है। एक भैरू अनेक असंख्य भैरू रूप में मान्य, ऐसे ही जोगणी के विविध रूप मिलते हैं। अपने-अपने अंचलों, जातियों, संघों, समुदायों के देवी-देवता, पीर-पैगम्बर, पूरवज। पूर्वजन्म और पुनर्जन्म के बंधेबंधाये चक्र में पानी की गेड़ की तरह इनके विविध जन्मों, रूपों, चमत्कारों तथा परचों की प्रभावना से अनुप्राणित हो लोक ने इन्हें विविध नामों से संबोधित किया। कई कथाएं और अन्तर्कथाएं सुनकर इनके अवतरणों-अवतारों का पार नहीं मिलता।

हिंगलाज देवी का तन्नोट माता के रूप में जो अवतरण हुआ वही कम अचरज भरा नहीं है। हिंगलाज के वचनानुसार मांडप्रदेश, जैसलमेर में चेलक निवासी मामड़ियाजी की प्रथम संतान के रूप में संवत् 808 में आवड़ देवी का जन्म हुआ। इनके विविध चमत्कारों से यह देवी नागणेची, काले डूंगरराय, भोजासरी, देगराय, तेमड़ेराय तथा तनोटराय नाम से प्रसिद्ध हुई।

लोक देवता कल्लाजी राठौड़ जोधपुर के संस्थापक जोधाजी के पुत्र दूदाजी के पौत्र खेमराज की संतान थे। इनकी माता श्वेतकुंवर ईडर के लक्खूभा चौहान की पुत्री थी। संतान नहीं होने के कारण इन्होंने बड़े आत्मभाव से विवाह के अन्तरवासे का पुतला बनाया और शिव-पार्वती की तन्मयभाव से आराधना करने पर पुत्र जन्म हुआ। तब अन्तरवासा केसर में डूबोकर बनाया जाता था फलस्वरूप उस बालक का नाम केसरसिंह रखा। इस कारण कल्लाजी जाये नहीं थे, उपाये गये थे। यह घटना संवत 1564 की है।

-शेष पृष्ठ सात पर

पत्रों के आलोक में

बालकवि वैरागी, मनासा के पत्र

मनासा के बालकवि वैरागी के मेरे पास पचास के करीब पत्र संभाले हुए हैं। ये पत्र 1977 से लेकर 2017 तक के हैं पर उनसे सम्पर्क तो अन्त तक रहा। कहीं से भी जब-जब उन्हें लिखने का मन बना, कभी पोस्टकार्ड, कभी अन्तर्देशीय तो कभी छोटे-बड़े पत्र लिखे। जो भी पुस्तक भेजता, उस पर प्रतिक्रिया लिखते।

हमने साथ-साथ भी यात्रा की। उदयपुर कविसम्मेलन में या फिर महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के पुरस्कार समारोह में आये, मुझे याद किया। चेटक सर्कल स्थित मेरे ऑफिस पार्श्वकल्ला में भी उनसे भेंट हुई।

एकबार मैंने अपनी संस्था 'सम्प्रति संस्थान' के एक समारोह में उन्हें आमंत्रित किया तब वे अपने खास साथी और मेरे भी घनिष्ट मित्र डॉ. पूरन सहगल के साथ आये। यह समारोह साहित्य अकादमी के सहयोग से हुआ जो बड़ा स्मरणीय रहा। भोपाल की यात्रा भी उनके तथा डॉ. सहगल के साथ हमने की थी। सम्भवत: वह 25 सितम्बर 2011 की थी। वहां की एक संस्था ने सांझी पर समारोह आयोजित किया। मुझे याद आया कि ठीक उसी दिन 50 वर्ष पूर्व मेरा सांझीकला पर धर्मयुग में आलेख छपा था जिसका शीर्षक था- 'गुड़-गुड़ गुड़ल्यो गुड़तो जाय।' इसकी वहां बड़ी चर्चा रही और मुझे भी अच्छा लगा कि संझ्या कहां-कहां तक जड़ें जमाई हुई हैं। यह कुमारिकाओं का श्राद्धपक्षीय उत्सव है जो प्रत्येक जाति में प्रचलित है और तिथि के अनुरूप गोबर से लड़कियां मुख्य दीवाल पर अंकन बना उन्हें तरह-तरह के फूलों से बड़ी खूबसूरती से सजाती हैं।

बानगी के तौर पर यहां कुछ पत्रों में वैरागीजी द्वारा लिखी बातें द्रष्टव्य हैं-

13 मई 1977 के पत्र से -

आपकी 'राजस्थान की संझ्या' पुस्तक पढ़ गया। गीतों की स्वरलिपियां और मूल गीत देने के साथ-साथ उसमें रेखाचित्र देकर पुस्तक को पीढ़ियों के लिए थाती बना दिया है। आपका श्रम मुखर है और कोई कुछ कहे उससे पहले वह खुद बहुत कुछ बोल रहा है। मैं आलोचक नहीं। मेरा लिखा इसलिए भी निरर्थक हो जायेगा कि मैं लोकपक्ष का अनुगायक हूं।

11 जनवरी 1978 का यह पत्र-

आदरणीय श्री महेन्द्र भाई

सादर प्रणाम

व्यस्तता की ऐसी तैसी। सामरजी (देवीलाल) को मैं पहलीबार 'लोकमहर्षि' पुकार रहा हूं। इस पुकार को अनुगूंज दो। व्याप्ति दो। मेरा एक लेख 'लोकजीवन के लय पुरुष सामरजी' संलग्न है। स्वीकार करो। विलम्ब का दण्ड भी स्वयं चुका रहा हूं।

भाई

बालकवि वैरागी

24 जनवरी 1979 को लिखा-

29 जनवरी की अपरान्ह तक कानोड़ पहुंच जाऊंगा। आपसे पहली भेंट आपके जन्म स्थान पर होने का सुयोग भी कानोड़ आने के लिए मेरे निमित्त एक प्रलोभन ही है।

कानपुर से 17 फरवरी 1979 के पत्र में वे लिखते हैं-

कानोड़ आप नहीं पहुंचे। मेरी शिकायत लिखलें। कवि सम्मेलन और सर्दियां! ओफ! सबकुछ ऐतिहासिक रहा। आपकी याद भी करता रहा। मंच पर आपको तलाशा भी। अस्तु। आपका आदेश मानकर मुझे सुख ही मिला है।

संदर्भ - यह मेला-कविसम्मेलन कानोड़ की नगरपालिका द्वारा आयोज्य था। कवि बुलाने के लिए मुझे कहा था पर मुझे आमंत्रित नहीं करने से मैंने पहुंचना उचित नहीं समझा।

29 नवम्बर 1979 का पत्र -

मेरी राम कहानी एक-दो नहीं, पूरे 623 टाइपशुदा पूर्ण पृष्ठों में 'मंगते से मिनिस्टर' नामक पाण्डुलिपि में कलमबद्ध तैयार पड़ी है। आप 'पीछोला' के लिए मात्र 500 शब्दों में चाह रहे हैं, मेरे लिये यह कठिनतम स्थिति है। इस स्टेज पर इतना संक्षिप्त करना बड़ा विचित्र होगा।

मैंने दशामाता व्रत-कथाओं की मेरी राजस्थानी कहानियों पर 'आछी करणी पार उतरणी' पुस्तक की भूमिका लिखने का वैरागी से आग्रह किया था। उसी सन्दर्भ की उनकी यह टिप्पणी उन्होंने 16 अप्रेल 1983 को लिख भेजी-

मेरी व्यस्तताएं बहुत ही निकम्मी हैं। भोपाल से आया तभी से पूरन लट्ठ लेकर पीछे पड़ा हुआ है। एतिहात के तौर पर एक काम यह कर रहा हूं कि एक लिफाफा मैं खुद पोस्ट कर रहा हूं। दूसरा दे रहा हूं पूरन को। वह भी कर देगा। एक-न-एक तो आपको मिल ही जायेगा। आपको तार भी कर रहा हूं कि भूमिका भिजवा दी है। जिस भी तरह काम में आ जाये, काम में लेलें। मेरा आपको यही प्रणाम है। आप एक मौन साधक हैं और आपका अभिवादन करने को फिलहाल मेरे पास यही एक रास्ता है कि आपका आदेश मान लिया जावे। - 16 अप्रेल 1983

आछी करणी पुस्तक में 'कूंपर सबती ऊपर' शीर्षक से ही मैंने उनकी भूमिका प्रकाशित की। इसका उदयपुर में लोकार्पण भी हुआ। मैंने वैरागीजी का आभार मानते उन्हें पत्र लिखा। उसके उत्तर में 19 अप्रेल 1983 के पत्र में उन्होंने लिखा-

आदरणीय श्री महेन्द्र भाई

सादर अभिवादन

आपका पत्र मिला। आप विभोर और विव्हल हैं, यह आपके पत्र से स्पष्ट होता है। ऐसे व्यक्ति को अब क्या लिखा जाये जो मन से ही बह रहा हो? वे सभी (पृष्ठ 80 आछी करणी पार उतरणी) के मैंने खुले-के-खुले मेरी पत्नी को दे दिये। सुशील ने वे कहानियां सरसरी नजर पढ़ीं। तत्काल मेरी मां को उसने बुलाया और फिर बहू ने पढ़कर सास को एक-एक कहानी सुनाई। मैं अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा-बैठा उन कहानियों को सम्प्रेषण के लिहाज से सुनता रहा।

मां हुंकारा देती थी और सुशील पढ़ती थी। कोई दो घण्टों तक घर में सारा लोक-संसार साकार हो गया। मेरी मां इस समय 71 साल की है। कई कहानियां उसने भी पहलीबार सुनी। रूपान्तर के साथ सभी कहानियां यहां-वहां मिलती हैं। मेवाड़ी की इन कहानियों ने शब्दश: सम्प्रेषित किया।

हर कहानी के बाद मां एकबार 'राम' का नाम लेती थी और आंचल से झाला देकर दूसरी कहानी के लिए तत्पर हो जाती थी। इनको सुनने का भी एक लोकाचार है। उसका निर्वाह मैंने नये सिरे से देखा। यह जो कुछ भी अभिनव है, सब मैं आपको समर्पित करता हूं ताकि आप मां मेवाड़ी को समर्पित करदें।

इसी पत्र में मैंने उन्हें लिखा कि मैं आपसे हर दृष्टि से बहुत छोटा हूं, कृपया आप मुझे अपने पत्रों में आदरणीय का सम्बोधन न दें। इसका उत्तर भी उन्होंने इस पत्र के अन्त में दे दिया। लिखा-

मित्रों को पत्र लिखते समय मैं सम्बोधन से ही अपने संस्कार के प्रति सचेत हो जाता हूं। इसमें आप अटपटा नहीं मानें। यह औपचारिकता नहीं, मेरा संस्कारगत मामला है। यहां कोई समझौता नहीं हो सकेगा। पूरन आपका पत्र देख रहा है। आपको सादर अभिवादन कहता है।

भाई

बालकवि वैरागी

12 जनवरी 1984 के पत्र में चौंकानेवाली बात लिखी जिसे पढ़ मैं स्तब्ध रह गया। पत्र इस प्रकार है-

आप उदयपुर में नहीं मिले, यह मेरा निजी घाटा है। मैंने तो आपको पुकार तक पड़वाई थी। शायद, आपने मिलना उचित नहीं समझा हो। भारतीय लोककला मण्डल के बारे में पढ़कर दु:ख हो रहा है। बरगद को भी दीमक लग जाती है। तना खोखला रह जाता है। सामरजी की तपस्या शायद यूं ही अर्थ नहीं खो दे। भगवान हमको सक्षम बनाये।

कविसम्मेलन पर मेरे पास पचासों पत्र तारीफ के आये हैं। मैं तो पढ़-पढ़कर हैरान हूं। एक विद्यार्थी का पत्र बहुत मार्मिक था। वह लिखता है कि यदि उस रात वह मुझे नहीं सुनता तो शायद दो-चार दिन बाद ही आत्महत्या कर बैठता। अब वह अपने संघर्षों के जूझ रहा है। उस पत्र ने मुझे झकझोर दिया है। वहीं उदयपुर के आसपास का है। घर से भागकर निराश होकर मरने जा रहा था।

08 दिसम्बर का यह पत्र पढ़ें-

परम आदरणीय श्री डॉ. महेन्द्र भानावत

सादर अभिवादन

मन्दसौर-जावरा संसदीय क्षेत्र से अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (इ) के श्रेष्ठि मण्डल ने मुझे अपना अधिकृत उम्मीदवार बनाकर मुझ पर एक अत्यन्त गुरुतर एवं गरिमापूर्ण दायित्व डाला है। इस अवसर पर आपकी पवित्र शुभकामना से मुझे बहुत ही बड़ा सहारा मिला है। मैं आपका ऋणी हूं।

देश आज जिन परिस्थितियों में से निकल रहा है वे आपसे छिपी नहीं हैं। लोकमाता पूज्या इन्दिराजी हमसे छीन ली गई हैं। भारत जैसा विशाल प्रजातंत्र आज विश्व के सर्वाधिक युवा प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को अपना केवट बनाकर समस्याओं के ज्वार से जूझ रहा है। ऐसे में कांग्रेस (इ) का मुझ पर यह विश्वास किसी तपस्या के फलन से कम नहीं है। मैं चुनाव मैदान में सक्रिय हूं। आपकी शुभकामना और कांग्रेस के हजारों मैदानी कार्यकर्त्ता तथा बुजुर्ग आशीर्वाददाताओं के पीछे चलते हुए मैं परिणामों के प्रति समर्पित एवं आशान्वित हूं।

प्रभु मुझे इस योग्य सिद्ध करे कि मैं इस क्षेत्र की जनाकांक्षा को शिल्प दे सकूं। बेटी के विवाह पर मेरी शुभकामना स्वीकार करें।

18 जून 1996 के एक पत्र के अनुसार -

आदरणीय श्री महेन्द्र भाई

सादर प्रणाम

पूरे तीन सप्ताह (28 मई से 17 जून तक) उत्तरांचल में बिताकर कल घर आया हूं। ये तीन सप्ताह एक तरह से केवल मेरे और सुशील के बीच की सम्पदा रहे। उधर मां गंगा के तट पर चिन्तन, मनन, पठन, पाठन, वाचन, संस्कृति, सम्पर्क, मित्र-सम्बन्ध, भ्रमण, संत-दर्शन, वाणी-श्रवण, पूजन-अर्चनन-आराधन, सम्मेलन, कीर्तन, साहित्य अवगाहन और जिज्ञासा शमन जैसे कामों में लगा रहा। लेखन के लेखे से 21 दिन तक एक तरह से 'शून्यकाल' कहे जा सकते हैं। देश-दर्शन और स्वयं से एकालाप तथा समाज से साहित्य, संस्कृति और राजनीति पर मुक्त चर्चा कितनी ऊर्जा देती है, यह आभास दिव्य स्तर पर हुआ। प्रभु का कृतज्ञ हूं कि मैं अल्पकाल के लिए ही सही पर यह सब कर सका।

आपका 31 मई का पत्र पाकर राहत मिली। आशा है आपकी यात्रा (वर्माजी से जुड़ी) सफल रही होगी। आप यदि उस दिन उदयपुर में मिलते तो मैं सारा दिन आप पर ही बोझा बनता। तय करके चला था। आप बाल-बाल बच गये। पुन: उपस्थित होने का खतरा मंडरा रहा है। तैयार रहिये।

नववर्ष 2011 पर उन्होंने एक कविता लिख भेजी-

कुंकुम बरसा जाओ

मेरे नूतन वर्ष!
बहुत ही सोच समझ कर आना।
बहुत बुरा बीता है मेरा
पिछला वर्ष पुराना।।
पता नहीं किस-किस ने किसको
क्या-क्या तो कह डाला।
पता नहीं कितनों ने पहनी
कैसी-कैसी माला।।
गूंगे बकते रहे गालियां
अंधों ने रवि का रथ हांका।
लंगड़ों ने चढ़ गौरीशंकर
आसमान पर डाला डाका।।
धरती सारी धधक रही है
गायक सब चिल्लाते।
समझदार सिर पीट रहे हैं
समझाते-समझाते।।
तब भी तुम यदि आते हो तो
बड़े मजे से आओ।
काजल की काली बारिश में
कुंकुम बरसा जाओ।।

10 फरवरी 2011 की कविता इस प्रकार है-

कृपा करें आशीष दें

यश और विष पर्याय हैं समझ गया यह बात।
इन्हें पचाना कठिन है, रोज करें उत्पात।।
अपच जरा भी हो गया, ले लेते हैं प्राण।
एक तेज तलवार है दूजा स्वर्ण कृपाण।।
यश यदि मुझसे छीन ले विद्या विनय विनीत।
तो कविता बस पाखण्ड है, झूठे हैं सब गीत।।

राम कृपा से हो गये पूरे अस्सी साल
अभी तलक तो ठीक हैं,चाल ढाल और हाल
मित्र लोक से मिल रहा, अटाटूट सम्मान
मातु शारदा रख रही पल-पल मेरा ध्यान
आयु वृक्ष पर आ गया इक्यासीवां फूल
कृपा करें आशीष दें, दैव रहे अनुकूल।।

30 जुलाई 2011 को लिखा पत्र इस प्रकार है-

मैं स्वयं और मेरा समूचा परिवार आपका और आपके सभी स्नेहीजनों का अत्यन्त आभारी है कि आपने श्रीमती सुशीलचन्द्रिका वैरागी (मेरी पत्नी सुशील 'पिया') के देहावसान पर अपनी सांत्वनाओं और सम्वेदनाओं से परिपूर्ण पत्र भेजकर हम लोगों की सुधि ली। हमें सम्हाला।

'पिया' को 'ए प्लास्टिक एनीमिया' नामक असाध्य बीमारी थी। वह 72 वर्ष की आयु में 18 जुलाई 2011 को श्रावण सोमवार के दिन स्वर्ग सिधारी। उसका मेरा वैवाहिक जीवन 58 वर्ष का रहा। उसका नेत्रदान करवाया गया। अंतिम स्वांस उसने नीमच में ली। दाह संस्कार मनासा में करवाया गया। वैरागी परिवार ने इस प्रसंग को 'मृत्यु महोत्सव' के रूप में मनाया। ना कोई रोना-धोना, ना कोई मृत्युभोज। जैसा कि सुशील का हंसता ठहाके लगाता स्वभाव था वैसा ही हम पारिवारिक जीवन आज भी जी रहे हैं। तीसरे दिन उठावना करके बैठकों पर पूर्ण विराम लगा दिया। मेरे जीवन में वह चतुर्दशी के चन्द्रिका पूर्ण चन्द्र की तरह थी। उसकी तेरहवीं कैसे! अमर आत्मा पर कैसा शोक?

- शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (156) : डॉ. महेन्द्र भानावत

आचार्य रजनीश का वह प्रथम शिविर और पहली पुस्तक

साहित्य साधना और आध्यात्म के क्षेत्र में आचार्य रजनीश ने भारतीय चिन्तन में क्रान्ति का जिस प्रखरता से सूत्रपात किया वैसा सम्भवत: कहीं किसी ने नहीं किया। यहां का बुद्धिमानस उस लपट की बयार में रीझा भी तो खीझा भी कम नहीं। यहां का मनुष्य रजनीश को झेल नहीं पाया। वह बाहर से उसे नकारता रहा पर भीतर मन से उसके सत्व को सकारने का रस भी लेता रहा।

इसे सुखद संयोग ही कहा जाना चाहिए कि रजनीश ने अपनी आध्यात्मिक साधना का बीजवपन राजसमंद से किया। यह कोई योजनाबद्ध नहीं हुआ। सेंतमेंत में ही हो गया। राजसमंद में आचार्य तुलसी के सान्निध्य में दर्शन परिषद का आयोजन करना था। स्वागताध्यक्ष उदयपुर के हीरालाल कोठारी थे। इस परिषद में ऋषभदास रांका ने सुझाव दिया कि रजनीश को आमंत्रित किया जाय जो जबलपुर के महाकौशल महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक थे।

आचार्य तुलसी के साथ मुनि नथमल भी थे जो तुलसी के बाद महाप्रज्ञ के रूप में आचार्य बने। तीनों के बीच जैन दर्शन के कई विषयों पर गहन मंत्रणा हुई। मुख्यत: ध्यान पर केन्द्रित विमर्श में आचार्य तुलसी ने कहा कि इसके लिए एकाग्रता जरूरी है। रजनीश ने अपनी असहमति जताते हुए कहा कि एकाग्रता नहीं, अनाग्रहता और विचार विहीनता जरूरी है। ऐसी और भी बातों पर रजनीश ने अपनी असहमति व्यक्त की। बाद में मुनि नथमल ने सबके सम्मुख अपना प्रवचन दिया और रजनीश के साथ जो वार्ता-विमर्श रहा उसका विस्तार से जिक्र किया।

मुनि नथमल के पश्चात रजनीश ने अपनी उन सारी बातों का खुलासा किया जो आचार्य तुलसी के साथ हुई। वे सारी बातें तुलसी के विचारों से विपरीत थीं जिन्हें सुनकर सभी चकित हो गये परन्तु सबने ध्यानपूर्वक सुनी और उनका विद्वानों पर बड़ा गहरा साकारात्मक असर पड़ा।

यहीं उदयपुर के हीरालालजी कोठारी रजनीश के गहन सम्पर्क में आए। उदयपुर के और भी कई गणमान्य लोग थे जिन्होंने कोठारीजी से उदयपुर में रजनीश को आमंत्रित करने को कहा। फलत: कोठारीजी ने दूसरे ही वर्ष उदयपुर के विद्याभवन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में उनका व्याख्यान आयोजित किया। इस व्याख्यान का इतना जबर्दस्त प्रभाव रहा कि संध्या को ही लंबरदार स्कूल में उनका एक और व्याख्यान रखा गया। यह दिन 27 मार्च 1964 का था। इस व्याख्यान में लोगों की जबर्दस्त उपस्थिति थी और रजनीश को सुनकर सभी इतने प्रभावित हुए कि उनका मन नहीं भरा तब सभी ने मिलकर कोठारीजी से रजनीश को शीघ्र ही किसी शिविर में आमंत्रित करने का सुझाव दिया और अधिक सुनकर मन तृप्त कर सकें।

कोठारीजी लगातार रजनीश के सम्पर्क में रहे और उन्हीं के घर रजनीश ठहरे। कोठारीजी ने तब रजनीश से कई लोगों की भेंट कराई। इस कारण रजनीश भी यहां के लोगों की आत्मीयता से बड़े प्रभावित हुए। बाद में कोठारीजी का रजनीश से लगातार पत्राचार चलता रहा। समय देखकर उन्होंने मुंछाला महावीर में एक शिविर का आयोजन रखा। इस शिविर के लिए रजनीश ने जो समयचक्र भेजा वह इस प्रकार था-

(1) प्रात: 7 से 8 बजे सम्यक् स्मृति प्रयोग तथा श्रम
(2) 8 से 9.30 बजे तक प्रवचन
(3) 9.30 से 10.30 बजे तक प्रश्नोत्तर
(4) दोपहर 3 से 5 बजे तक व्यक्तिगत सम्पर्क और चर्चा
(5) रात्रि 8 से 9 बजे तक ध्यान
(6) 9 से 9.30 बजे तक सम्यक् स्मृति प्रयोग

चार से आठ जून 1964 का यह शिविर बड़ा सफल रहा। इसमें एक कुत्ता भी प्रतिदिन प्रवचन सुनने आता था। इस शिविर के प्रवचनों का संकलन 'साधनापथ' नामक पुस्तक में किया गया। यह शिविर रजनीश का प्रथम शिविर था और प्रकाशन की दृष्टि से भी यह उनकी पहली पुस्तक थी।

शिविर के अंतिम दिन 8 जून 1964 को रजनीश को रणकपुर ले जाया गया। सभी ने रणकपुर का मंदिर-स्थापत्य देखा पर रजनीश ने नहीं देखा। उन्होंने कहा, ' जिसे आप लोग अतुलनीय कह रहे हो, मुझे लग रहा है जैसे यह किसी का अहंकार खड़ा है।' इस कथन ने लोगों पर एक नये रूप का प्रभाव छोड़ा और पुन: रजनीश को सुनने का आग्रह बढ़ा। तब कोठारीजी ने विद्याभवन में 14 से 17 मार्च 1966 को दूसरा शिविर आयोजित किया। इसमें रजनीश की बहिन श्रीमती क्रान्ति ने भी भाग लिया। इसी प्रकार एक शिविर 4 से 7 जून 1967 के बीच मीरां कन्या महाविद्यालय में लगाया गया।

शिविरों की इस श्रृंखला का दूर-दूर तक बड़ा असर पड़ा। बाहर के लोगों की संख्या भी बढ़ने लगी तब कोठारीजी ने 8 से 11 मार्च 1968 को कृषि महाविद्यालय में शिविर लगाया। उसमें बम्बई, जयपुर, अहमदाबाद के भी कई लोग थे। इस शिविर में एक व्याख्यान मैंने भी सुना। रात्रि को प्रवचन के बाद जब ध्यान करने की घोषणा की गई तो मैं उसमें शरीक नहीं हुआ और अपने घर चला गया। वहां मैंने कुछ लोगों को ध्यानावस्था में गिरते भी देखा। इसके पश्चात रजनीश का एक और शिविर महिला परिषद के स्टेडियम में 3 से 6 जून 1969 को हुआ। इन सारे शिविरों के आयोजक कोठारीजी ही रहे। इन शिविरों का प्रभाव इतना फैला कि रजनीश के कई शिष्य बन गए जो अपनी-अपनी जगह शिविरों की मांग करते रहे।

रजनीश से कोठारीजी का सम्पर्क निरन्तर बना रहा। पत्राचार भी होता रहा। आबू के शिविर में तो कोठारीजी उनसे दीक्षित ही हो गए तब उनका नामकरण ही रजनीश ने 'साधु जिनराजदास' कर दिया। इन सारे शिविरों में नाथद्वारा की भूरीबाई भी बराबर उनके साथ रही। उदयपुर के जो महानुभाव रजनीश के बराबर सम्पर्क में रहे उनमें सर्वश्री बलवंतसिंह मेहता, केसरीलाल बोर्दिया, वैद्य भवानीशंकर, चन्द्रेश व्यास, प्रो. कमलचंद सोगानी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। मेरा इन सभी से सम्पर्क रहा।

कोठारीजी से मेरा उनके निवास पर कई बार मिलना हुआ। वे स्वभाव के बड़े सरल, सहृदय और मिलनसार थे। उन्होंने मुझे रजनीश के भेजे कई पत्र बताये जो उनके नाम लिखे हुए थे। रजनीश की लिखावट बड़ी सुंदर तथा मोहक थी। वे नई कविताओं की तरह पत्र लिखते। उन कई पत्रों में से एक पत्र यहां प्रस्तुत है-

प्रिय मेरे !
मेरी यात्राएं करीब-करीब पूरी हो गई हैं।
जिनसे किसी जन्म में किये गये वायदे थे
वे मैंने निभा दिये।
अब तो एक ही जगह रहूंगा।
जिन्हें आना है वे आ जावेंगे।
वे सदा ही आ जाते हैं और शायद इस भांति
वे आ जावेंगे तो मैं उनके ज्यादा काम आ सकूंगा।
विस्तृत कार्य कर चुका।
अब गहन कार्य में लगता हूं।
पुकार आया गांव-गांव लोगों को।
अब उनके आने की प्रतीक्षा करता हूं।
ऐसा ही है अब आदेश अंतर का।
उस आदेश से अन्यथा न तो मैंने कभी कुछ किया है
न कर ही सकता हूं।

रजनीश का प्रणाम

कहना नहीं होगा, अन्त में पूना में रजनीश ने अपना बहुत बड़ा आश्रम खोला। वहां मैं तो नहीं गया पर कानोड़ के मेरे मित्र सोहनलाल धींग अवश्य जाते रहे। उदयपुर में भी रजनीश पंथियों का संगठन है। सच तो यह है कि अपनी वाणी और विचारों से रजनीश ने पूरे विश्व को प्रभावित किया फिर तो वे भगवान रजनीश होते-हाते ओशो ही हो गये।

बाड़मेर की नक्काशी

-पी. आर. त्रिवेदी-

रेगिस्तानी इलाके में मीलों तक फैले रेतीले मैदानों में रहने वालों का जीवन बड़ा ही दूभर रहता है। न वृक्ष, न वनस्पतियां और न पीने का पानी; अभाव-ही-अभाव मिलेगा परन्तु वहां भी लोग न हार मानेंगे, न निराश होंगे बल्कि जीवन को कैसे अधिकाधिक सुन्दर तथा रसमय बनाकर जिया जाय, यह सीखने को मिलेगा।

यह आश्चर्य ही है कि ऐसे अभावग्रस्त इलाके में ही संगीत के जितने गायक, वाद्यों के वादक और कलाकारों के करिश्में देखने को मिलेंगे, अन्यत्र नहीं मिलेंगे। ऊंटों के जो करतब यहां मिलेंगे, दांतों तले अंगुली दबाते रह जायेंगे। यहीं नड़ वादक करणा हुआ। खड़ताल वादक सिद्दीक और गायक नूर मोहम्मद ने अपनी सांगीतिक कलाओं से झूंपे से बाहर कदम रखकर विश्व भ्रमण किया। उनकी विरासत ने जो द्वार खोले, आज अनेक कलाकार अनमोल खजाने की तरह दीप्त हो रहे हैं। मटकी जैसा वाद्य यहीं जीवन रस का संगीत बना हुआ है।

काष्ठकला की दृष्टि से भी अनेक कलाकार उत्कृष्ट नक्काशी काम के लिए पहचान बनाये हैं। एक नाम बाड़मेर जिले के ऊण्डखा गांव के प्रहलादराम का लिया जाता है जो काष्ठकला पर अपनी उत्कृष्ट कला का सुचर्चित सुनाम लिये है। इनके समाज में वर्षों से चला आ रहा मिथक आज भी सुनने को मिलता है। उसके अनुसार अपनी कला अपनी सुथार जाति के ही लोगों की धरोहर बनी रहे। अन्यों को सिखाना वर्जित रहेगा तो ही हम ठीक से अपना भरण-पोषण कर पायेंगे और हमारा नाम चलता रहेगा।

प्रहलादराम ने अन्यों को यह कौशल सिखाया। उसका सिद्धान्त था, ज्ञान फैलाने से बढ़ता है। उसे कैद करने से वह कुन्द पड़ जाता है और फलीभूत भी नहीं हो पाता है। पूरी प्रकृति नदी, पहाड़, वृक्ष, जंगल सबके सब अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जी रहे हैं तो मनुष्य को भी संकीर्ण होने की बजाय उदार होना चाहिए।

यह सोच प्रहलादराम ने लकड़ी के छोटे-से-छोटे तथा बड़े-से-बड़े शिल्प पर अपनी नक्काशी कला से उसे जो खूबसूरती देना शुरू किया कि पूरे चौखले में उसे कद्र मिलते-मिलते उसका क्षेत्र विस्तार हुआ। शुरू में उसने अपने यहां उपलब्ध रोहीड़ा की लकड़ी पर काम प्रारम्भ किया पर जब इसकी उपलब्धता नहीं रही तो सागवान की लकड़ी काम में लेनी शुरू की। यह लकड़ी इन्दौर, आसाम, भावनगर से मंगवानी प्रारम्भ की।

पहले से चली आ रही परम्परा में उसने बहुत सारी अपनी खूबी का कौशल दिखाते पाट, बिजानी, सुरमादानी, हुक्का, विविध लोकवाद्य, चारपाई, चरखा (अरठ), सन्दूक, खिलौने, दरवाजे की चौखट, घट्टी, चौखटों के घोड़े, मकान की छत (सियाल), बैलगाड़ी, पिलान आदि के साथ नई चलन के सोफे, टेबल, कुर्सी, टीवी, रैक, बक्से, फोटोफ्रेम, ड्रेसिंग टेबल, डाइनिंग सेट, पलंग, पालने लेकर उसको भी नक्काशीदार बनाकर बहु उपयोगी बनाया।

प्रहलादराम इसके लिए सोरसी, गिणीयार, पेचकस, पकड़, अरगत, होण, पथरी, खरोती, बरमी, कवोण, रन्दो, हथोड़ी, गोल नरुया, सफाई नरुया, उप्पा, नखलो, आजोली, सोनस, भीड़ो, कम्प्रेशर जैसे यन्त्रों-औजारों की सहायता से मनचाही चीजों को मनभावन बनाते हैं।

रेगिस्तान जैसे इलाकों में ही नहीं, अन्यत्र प्रचलित शिल्प और उद्योग को उचित संरक्षण और कारीगरों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराने में सरकार का महत्त्वपूर्ण योग अनिवार्य है। प्रहलादराम का भी यही कहना है कि नक्काशी जैसे उद्योग को पनपाने के लिए बिचौलियों से मुक्ति दिलानी होगी। अच्छे बाजार बनाने होंगे।

समय-समय पर निर्माणकर्त्ताओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी। नई-नई डिजाइनों की जानकारी से उन्हें अवगत कराना होगा। सस्ती दर से लकड़ी उपलब्ध करानी होगी। सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध कराना होगा तब जाकर अधिकाधिक लोग खरीददार के रूप में आगे आयेंगे और अनेक लोगों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 जनवरी 2023

सम्पादकीय

वन्दना के स्वर मिलालो

भारतमाता की वन्दना विभिन्न समयों में विभिन्न लोगों ने विविध ढंग से की है परन्तु सबका भाव एक ही रहा, सुख, समृद्धि, खुशहाली का। सर्वे भवन्तु सुखिनः का।

इस वन्दना में कोई भेदभाव नहीं था। जाति पांति, वर्ग भेद, तू मैं ; कुछ भी नहीं था। हमारे पर शासन करने कितने ही आक्रान्ता आये, आक्रमण हुए, अनाचार, अत्याचार हुए मगर बड़ी बहादुरी से हम सबने अपने-अपने ढंग से मोर्चा सम्भाले उनका मुकाबला किया और स्वाधीनता की अलख जगाते कभी उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की। 'प्रबुद्ध शुद्ध भारती' बने रहे।

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फैंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।।

यह कविता 'पुष्प की अभिलाषा' है जो जेल में रहते कवि के अन्तस का अंगारा बन फूटी थी। इसका स्वर कभी भी कम बुलन्द नहीं होगा। सम्पूर्ण मानवता की स्वाधीन होने, रहने की चाहना है इसमें।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी ने तो 'जय-जय भारतमाता' का शंख-घोष करते अन्त में लिखा ही था-

तेरे प्यारे बच्चे हम सब, बंधन में बहु बार पड़े।
किन्तु मुक्ति के लिए यहां हम, कहां न जूझे, कब न लड़े?

गुलामी के समय भी हमारे तेवर 'सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा' का ही रहा और 'वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिलालो', 'वन्दे मातरम्' का रहा। 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है', 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा' जैसे गीतों और नारों ने जन-जन को आन्दोलित कर दिया।

रवीन्द्र बाबू का 'जन गण मन अधिनायक जय है' तो आजादी के बाद हमारा राष्ट्रगान ही बन गया और अब आजादी के अमृत वर्षों बाद फिर 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' पिछली उन सभी भावनाओं का प्रतिबिम्ब बन बड़ी पारदर्शिता के साथ भारतीय जनतंत्र का मंगल सूत्र बना है।

हमारी आजादी तो हमारे लोकतंत्र में लोक का मजबूत तंत्र लेकर आई थी। राजनीति का अर्थ राज्य की नीति से था। शासन की सर्वहारा नीति से था मगर हमने देश और राष्ट्र की भावना को ही हमारी-उसकी 'राजनीति' में विभक्त करदी।

मादक और सारहीन अधिकार-सुख और सत्ता-प्राप्ति के लाभ-लोभ में हमने अखिल लोक का ही तन्त्र-चूर कर दिया। अपनी-अपनी ढपली और अपनी-अपनी राग अलापने में हमने राष्ट्र को ही गूंगा बना दिया। भाषा तक को बेसुरा 'तासा' बना दिया। जिन अंग्रेजों के लिए हम कहते थे कि उनका सिद्धान्त 'फूट डालो राज करो' लिये था मगर आज जो राजनैतिक पार्टियां हैं वे क्या कर रही हैं?

अब तो हमारा ही देश, हमारा ही राज है। क्या 'आओ देश बनायें' जैसी भावना के मंगलाचार के लिए भी हमें एक-दूसरे की समझाइश का न्यौता देखा पड़ेगा!!

पाठकों को सूचना देते हर्ष है कि शब्द रंजन ने अपनी साहित्यिक यात्रा के सात वर्ष पूरे कर इस अंक से आठवें वर्ष में प्रवेश किया है।

टुकड़ों-टुकड़ों में मिला, जीने का वरदान

मनासा के डॉ. पूरन सहगल हम सब मित्रों में सबसे वरिष्ठ हैं। उन्होंने भारत विभाजन की त्रासदी भोगी है। यहां आकर वे हम सबके बीच ऐसे घुलमिल गये कि यदि वे यह बात नहीं लिखते तो हम उन्हें अपने से यत्किंचित भी भिन्न नहीं मानते। 13 जनवरी को उन्होंने 88वें वर्ष में प्रवेश किया है। हमारे विशेष आग्रह पर शब्द रंजन के लिए उन्होंने अपना यह आत्मकथ्य लिख भेजा है।

जीवन यदि वरदान है, ईश्वर का तो फिर इसे जीकर दिखलाना बहुत कठिन है। तनिक-सी भूल हुई कि, यह वरदान अभिशाप में बदल जाता है। संत भक्त मीरांबाई ने कहा है- 'ना जाने कछु पुण्य, प्रगटे मनुजा औतार।' पता नहीं, कौनसा पुण्य प्रकट हुआ कि हमें मानव अवतार प्राप्त हुआ।

मैंने तो कोई पुण्य उस जन्म में किए हों ऐसा आभास नहीं होता। बारह वर्ष की बाल आयु में भारत विभाजन की त्रासदी भोग कर जीवन लुढ़कता-गुड़ता यहां तक आ पहुंचा है। मैंने एक दोहा लिखा था -

टुकड़ों-टुकड़ों में मिला, जीने का वरदान।
वह भी शायद भूल से, दे बैठा भगवान।।

जैसे तैसे उम्र का यह अन्तिम चौथा पड़ाव आ पहुंचा है। वह भी समाप्ति की कगार पर खड़ा है। श्रद्धेय दादा बालकवि बैरागी ने कहा था - ''परमात्मा ने मुझे चार चवन्नी देकर संसार में भेजा था। तीन चवन्नी जैसे-तैसे खर्च हो चुकी है। अब एक चवन्नी शेष बची है। इसे कैसे खर्च करूँ? इसका सदुपयोग और दुरूपयोग दोनों सम्भव है। बहुत सम्भल कर व्यवहार करना पड़ेगा।

अब तक कई मित्र बने और कई बिछुड़ भी गए। सबकी स्मृतियां शेष हैं। उनके साथ व्यतीत कए गए क्षण-पल-दिन याद आते हैं। जो मित्र शेष बचे हैं मैं उनकी सलामती की दुआ करने में कंजूसी नहीं करता। सभी मित्र मुझे बहुत प्रिय हैं। सभी मुझसे प्यार भी करते हैं।

किससे पालूं प्रीत भला, मैं किससे बैर करूँ?
किसको अपना मीत कहूँ, मैं किसको गैर कहूँ?
सब मुझको अपने लगते हैं, मानो मां जाये हों,
किसको अपना शीश कहूँ मैं किसको पैर कहूँ?

सारा जगत जब अपना लगने लगता है तब जीवन में एक आनन्ददायक ठहराव आ जाता है। जो बिछुड़ गए वे एक रिक्तता दे गए। उस खालीपन की पूर्ति कर पाना असम्भव जैसा है। सन् 1918 में 13 जनवरी की दोपहर संगिनी कृष्णा ने अचानक साथ छोड़ दिया। 2018 की 13 मई को दादा बालकवि बैरागी ने साथ छोड़ दिया। माता-पिता पहले ही विदा हो चुके थे। आप सोचिए जिसके पास न तो माता-पिता का सम्बल बचा हो न पत्नी का भरोसा बचा हो और जिसके जीवन का आसरा और आश्वासन गुरु समान वरिष्ठ मित्र भी अचानक बिदा हो जाएं उसका जीवन कितना दूभर हो जाता है?

लम्बे समय तक मेरे जीवन में शून्यकाल बना रहा। लेखनी थम-सी गई। शोधयात्राएँ कुंठित हो गईं। फिर कुछ स्नेहीजनों ने जीने का सम्बल प्रदान किया। उनमें उज्जैन के डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा, डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा, डॉ. रमण सोलंकी, ग्वालियर के डॉ. संजय स्वर्णकार, डॉ. चारूचित्रा, भानपुरा के डॉ. प्रद्युम्न भट्ट, प्यारेलाल रांगोठा, रामनारायण चौहान, नीमच के डॉ. माधुरी चौरसिया, ओम आचार्य, भानु भाई दवे, मुकेश कालराजी, अजीत कांठेड़, अशोक अग्रवाल, संजय शर्मा, मनासा के अर्जुन पंजाबी, अशोक गुलाटी, प्रकाश गुलाटी, सुरेश शर्मा, महेश मलिक, मोहनलाल दुगरता, अजय गरासिया, उदयपुर के डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', भोपाल के मायापति मिश्रा, श्रीराम तिवारी, अशोक मिश्र, वसंत निरगुणे, रतलाम के विष्णु बैरागी, मंदसौर के प्रकाश रातड़िया, विक्रम विद्यार्थी, चन्द्रकला विद्यार्थी; ऐसे और भी कई मित्रों ने प्रेरित कर लोकजीवन से जुड़ने की लेखनी थमा दी। शोधयात्राएँ फिर से चल पड़ीं।

पत्नी के निर्वाण के पश्चात चाहा था अपनी वसीयत तैयार करदूँ। फिर सोचा क्या और कैसी वसीयत? ऐसा क्या है जो मैं वसीयत में लिखूँ? मैंने बहू व बच्चों, पोतों को सामने बैठाकर एक बात कही थी- ''मैंने जिन संस्कारों से तुम्हें सींचा है उन्हें सूखने मत देना। मुझे बाजार में किसी का कर्ज नहीं चुकाना है। कर्ज यदि शेष है तो वह मित्रों के स्नेह का है। उसे ध्यान में बनाए रखना। वह चुकाने योग्य नहीं है। वही मेरी विरासत है। उसे सहेज कर रखना। यही मेरी पूंजी है। यही मेरी वसीयत भी है।''

मैंने कभी भी किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखी। मैं बहुत जल्दी समझ गया था कि 'अपेक्षा' का फल 'उपेक्षा' और आशा का फल निराशा होता है। जो भी मिला उसे अपना श्रम-फल माना और जो नहीं मिला उसका दुःख नहीं माना। याचकता और दीनता को भी चरित्र में नहीं आने दिया।

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे बेटी जैसी बहू मिली। स्नेहिल बेटे, पोते मिले। सबने मिलकर मेरी शून्यता समाप्त करने में मुझे जीने का विश्वास दिलाया।

- डॉ. पूरन सहगल, मो. 9424041310

जिंक की चार इकाइयों को 19 पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदुस्तान जिंक को 33वें एमईएमसी, खान पर्यावरण और खनिज संरक्षण में विभिन्न श्रेणियों में 19 पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि जिंक द्वारा सतत विकास हेतु प्रथम पुरस्कार, व्यवस्थित और वैज्ञानिक विकास के लिए द्वितीय पुरस्कार, खनिज लाभकारी के लिए तीसरा पुरस्कार, सिंदेसर खुर्द खान में अपशिष्ट डंप के लिए तीसरा पुरस्कार, जावरमाला खदान ने खनिज संरक्षण में दूसरा और पर्यावरण नियंत्रण में तीसरा स्थान हासिल किया। बरोई खदान ने पर्यावरण नियंत्रण और वानीकीकरण में पहला, प्रचार और प्रसार में दूसरा, खनिज संरक्षण और सतत विकास में तीसरा स्थान हासिल किया। मोचिया खदान को खनिज सज्जीकरण तथा पुनर्ग्रहण एवं पुनर्वास में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

इसके अलावा, राजपुरा दरीबा खदान ने मिनरल बेनिफिसिएशन में पहला पुरस्कार, व्यवस्थित और वैज्ञानिक विकास में दूसरा पुरस्कार और रिक्लेमेशन और पुनर्वास में तीसरा पुरस्कार जीता। आगुचा खदान को अपशिष्ट डंप प्रबंधन, सुधार और पुनर्वास में प्रथम पुरस्कार और व्यवस्थित और वैज्ञानिक विकास में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। कायड माइन ने व्यवस्थित और सतत विकास और प्रचार और प्रसार में पहला पुरस्कार, सतत विकास और समग्र प्रदर्शन में दूसरा पुरस्कार जीता।

लोमड़ी और कौवा

लोमड़ी और कौवा
वही लोमड़ी वही वृक्ष की डाल
और वही कौवा।
लोमड़ी कौवे को फुसलाती है
हे पक्षीवर
तू बड़ा निडर
क्या है तेरा गला
भीड़ उमड़ती है भला
सुनाओ कोई गाना
नया तराना
कांव-कांव कव्वाली
फुदक-फुदक डाली
कौवे ने आव देखा न ताव
लोमड़ी को बताया अपना भाव
चालू किया ट्रांजिस्टर
पहले बोला खर.... खर
फिर बोला-
यह आकाशवाणी है
लोमड़ी डरी
हरि करे सो खरी
दुम दबाकर भागी
यह क्या हौवा
कहां गया कौवा!

- म. भा.

गीतांजली में रेडिएशन ऑन्कोलॉजी पर कांफ्रेंस

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के कैंसर सेंटर द्वारा एनुअल कांफ्रेंस ऑफ रेडिएशन ऑन्कोलॉजी आयोजित हुई। इसमें 250 फैकल्टी मेम्बर्स व डेलीगेट्स ने भाग लिया। साइंटिफिक सेशन के दौरन 80 शोधपत्र पढ़े गए। इस दौरान कैंसर मैनेजमेंट के मल्टी डिसिप्लिनरी अप्रोच जिसमें कैंसर स्पेशलिस्ट, कैंसर सर्जन, रेडिएशन ओंकोलोजिस्ट की संयुक्त रूप से ट्यूमर बोर्ड व कैंसर की नवीन गाइडलाइन्स पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई।

मुख्य अतिथि गीतांजली ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल व गीतांजली मेडिकल के डीन डॉ. डी. सी. कुमावत थे। कांफ्रेंस ओर्गेनईजिंग चेयरमैन डॉ. ए. आर गुप्ता व सेक्रेटरी डॉ. रमेश पुरोहित ने गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन जे. पी अग्रवाल, अंकित अग्रवाल, सी.ई.ओ प्रतीम तम्बोली, डॉक्टर्स व सम्पूर्ण प्रशासन का कांफ्रेंस में योगदान के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

कांफ्रेंस में एम्स दिल्ली के डॉ. डी. एन. शर्मा एवं डॉ. आर. के. व्यास, एम्स जोधपुर के डॉ. शंकर वन्निपुरम, अप्पोलो कैंसर सेंटर चेन्नई के डॉ. श्रीधर पी.एस द्वारा कैंसर मैनेजमेंट के गंभीर व महत्त्वपूर्ण शीर्षकों पर चर्चा की गई। कैंसर के इलाज के दौरान स्वस्थ टिश्यू को किसी तरह का नुकसान ना हो, समय रहते जांच होने पर सफलता दर बढ़ने व कैंसर के इलाज के दौरान सभी सुविधाएँ एक ही छत के नीचे होने की जानकारी दी गई।

अपना देश अपनी संस्कृति

वेश्या ने बनवाई चमना-राधा बावड़ी

भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा का नाम फड़ चित्रकारी के लिए तो देश-देशान्तर में प्रसिद्ध है। सन् 1977 की फरवरी में पहली बार मैं पड़ चित्रकारी के अध्ययन-अन्वेषण के लिए गया था, तब घींसूलालजी जोशी से मिलना हुआ था और बहुत सारी जानकारी प्राप्त कर राजस्थान की इस महत्वपूर्ण चित्र-पटावली और इससे जुड़ी गाथा-गायकी पर लिखा था। तब यह अन्दाजा नहीं था कि आने वाले समय में यह विधा इतनी ख्यात-प्रख्यात हो जायेगी कि दुनिया की निगाह अपनी ओर खींचेगी।

उसके बाद दिसम्बर 1996 में गया तो घींसूलालजी के निधन के बाद इस विधा में नामवरी करने वाले दुर्गेशजी और शान्तिलालजी से मिलना चाहा। दोनों भाइयों ने अपने पिता के पदचिन्हों पर चलकर फड़ चित्रकारी के क्षेत्र में न केवल विशिष्ट पहचान दी अपितु राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किया। दुर्गेशजी उस दिन वहां नहीं थे। शान्तिलालजी से बड़ी देर तक फड़ चित्रकारी के अतीत-वर्तमान को लकर भविष्य-कथन होता रहा।

शान्तिलालजी को इस बात पर बड़ा गुस्सा था कि फड़ कला के बारे में बहुत सारी जानकारी तो खोटी दी जा रही है। फिर उनके परिवार वालों के योगदान को भी जिस ढंग से व्यक्त किया जाना चाहिये, वह नहीं किया जा रहा है। मैंने उन्हें यही कहा कि फड़ चित्रकारी के काम में जो लोग लगे हुए हैं, उन्हीं को पूरी जानकारी नहीं है और हर व्यक्ति जब अपने को ही बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है तब अध्येता यह जान नहीं पाता है कि वस्तुत: कौन सही और प्रामाणिक है। जब से फड़कारी कला व्यावसायिक बनी है तब से भ्रांतियां ही अधिक फैली हैं। उन्होंने अपनी यह कला, शाहपुरा की उन्हीं के परिजनों जोशी गोत्र के छींपों की देन बताया और कहा कि इसके पीछे सात सौ वर्षों का इतिहास है।

उन्होंने यह भी कहा कि चित्तौड़ में रह रहे रामगोपाल जोशी ने इस फड़ कला को पांच सौ वर्ष पुराना मानकर उनके पुरखों से जो सम्बन्ध जोड़ा, वह भ्रांतिमूलक है। रामगोपाल हमारी गोत्र के नहीं हैं। वे डिग्गीवाल गोत्र के नामदेव छींपा समाज के हैं।

आजादी के बाद हमारे देश की बहुत-सी कला-विधाएं अपनी परम्परा से चिपकी रहने के कारण ही अपने अस्तित्व से हाथ धो बैठीं। फड़ कला के साथ भी यही होता यदि इसमें नये प्रयोग नहीं होते। यह अच्छा रहा कि दोनों भाइयों ने परिवर्तित होते माहौल में निराशा को ग्रहण करने की बजाय आशाजनक साहस दिखाया और फड़ चित्रकारी को बाहरी हवा दी। लोगों ने इस कला की उत्कृष्टता पहचानी और आज तो यह पट्ट चित्रावली साड़ियों के बोर्डर, बेडशीट, टाई, कमीज तक में दृष्टिगोचर हो रही है। अब यह सज्जा की, शोभा की, संग्रहालय की मूल्यवान धरोहर बन गई है।

इसी शाहपुरा में एक महत्त्वपूर्ण जानकारी यह मिली कि यहां के महाराणा उदयपुर महाराणा के साथ अपने अच्छे यादगार सम्बन्ध रखते थे। महाराजा उम्मेदसिंह (प्रथम) मराठों के खिलाफ लड़े और उदयपुर महाराणा का बड़ा साथ दिया। उनकी चमना नामक वेश्या खास मरजीदान थी जो उदयपुर की थी। शाहपुरा के राजकाज में भी उसकी बड़ी दखल थी। एक बार उसने महाराजा से यह इच्छा जाहिर की कि उसे एक लाख मोहरें देखने को मिले। महाराजा के पास भी इतनी मोहरें नहीं थी तब वहीं के एक सेठ से यह व्यवस्था कराई गई।

चमना एक लाख मोहरें देख बड़ी खुश हुई। महाराजा ने मोहरें सेठ को लौटानी चाही, पर सेठ ने यह कह लेने से मना कर दिया कि उन्हीं के राज में, उन्हीं के प्रताप से ये कमाई गई हैं। अत: हुजूर की चीज हुजूर को ही शोभा देती है। तब महाराजा ने ये मोहरें चमना को ही वापस करादीं।

चमना बड़ी होनहार महिला थी। उसने तो केवल मजाक में इतनी मोहरें एक साथ देखने की जिज्ञासा भर की थी। जब मोहरें उसे वापस की गई तो उसने उन्हें वहीं की जनता के लिए खर्च करने की सोचकर एक बड़ी ही कलात्मक बावड़ी बनवाई जो 'चमना बावड़ी' के नाम से आज भी उसकी यादगार लिए है। इन मोहरों में से बहुत सारी बच गई, तब चमना ने अपनी दासी राधा के नाम से एक बावड़ी 'राधा बावड़ी' बनवा दी।

यहां के नरेन्द्रसिंह वीरानी ने मुझे शाहपुरा के कलात्मक एवं सांस्कृतिक वैभव की जानकारी देते हुए बताया कि इतिहास में बहुत सारी बातों का उल्लेख नहीं होने के कारण अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी कण्ठ बैठी बातों को महत्व नहीं देते हैं जबकि इतिहास से भी अधिक जीवन्त और सच्चाई का पुट बातों में सुनने को मिलता है।

यहीं वीरानियों के भैरुजी का रातिजगा था। मुझे उदयपुर से दलपतसिंहजी और राजेन्द्रजी वीरानी ले गये। वहां भैरुजी के थानक पर चतुरसिंह वीरानी (88) ने बताया कि लगभग तीन सौ वर्षों से यहां भैरुजी का थानक है। शादी से पूर्व यहां वीरानी भाई जात देते हैं। इसमें सवा किलो आटे के बने चंदकिये (रोट-रोटले) भैरुजी को चढ़ाने पड़ते हैं। शादी के बाद ढाई किलो के चंदकिये चढ़ाने का भी दस्तूर है।

इन भैरुजी का मुख्य स्थान मालपुरा है। विजयनगर के राजेन्द्र को वहां के भैरुजी आते हैं। यहां भी उन्हीं को भाव आ रहा था। बड़ी संख्या में वीरानी परिवार के स्त्री-पुरुष यहां एकत्र थे। यहीं अखिल भारतीय वीरानी महासभा की कार्यकारिणी की बैठक भी हुई। महासभा द्वारा देश-विदेश में रह रहे वीरानी परिवारों की जानकारी प्राप्त कर स्मारिका प्रकाश में लाने का निर्णय लिया गया और उदयपुर में महाअधिवेशन करने का निश्चय किया गया। वर्ष भर पूर्व ही वीरानी परिवार की सुध लेने का दायित्व मालपुरा में उदयपुर के दलपतसिंहजी वीरानी ने लिया था जिसका निर्वाह उन्होंने किया और मुझे भी जाने का अवसर मिला। - म. भा.

शिविर में दिव्यांगों को मिले ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर और श्रवण यंत्र

उदयपुर (ह. सं.)। आजादी के अमृत महोत्सव एवं मकर संक्रान्ति के अवसर पर नारायण सेवा संस्थान द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार व दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग के सौजन्य से दिव्यांग एवं वृद्धजनों के सेवार्थ विशाल शिविर आयोजित किया गया जिसमें 850 से अधिक दिव्यांग लाभान्वित हुए।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान दिव्यांग बन्धुओं को आत्मनिर्भर बनाने व पुनर्वास के क्षेत्र में बेमिसाल काम कर रहा है। दिव्यांगजन समाज की मुख्यधारा में लौटने लगे हैं। समारोह के अध्यक्ष सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक मान्धातासिंह राणावत ने दिव्यांगों से केंद्र एवं राज्य सरकार की चल रही योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

इससे पूर्व संस्थापक कैलाश मानव, अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल, कमलादेवी, वंदना अग्रवाल, ट्रस्टी देवेन्द्र चौबीसा ने अतिथियों का अभिनंदन किया। नारायण सेवा संस्थान के यूके चेप्टर के मैनेजिंग ट्रस्टी भीखूभाई पटेल ने शिविर में आए दिव्यांगों को भोजन पैकेट व बिस्किट वितरित करते हुए गुजरात में शिविर करवाने की घोषणा की।

प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि उदयपुर के शिविर में 355 लोगों का पंजीयन हुआ। इसमें 100 को ट्राइसाईकिल, 20 को व्हीलचेयर और 20 को वैशाखी दी गई। वहीं वृद्धजनों और सुनने की समस्या ग्रस्त को 25 श्रवण यंत्र नि:शुल्क प्रदान किए गए। शिविर में 45 दिव्यांग का शल्य चिकित्सा के लिए चयन हुआ तथा 90 अंग विहिनों का कृत्रिम हाथ-पैर के लिए माप लिया गया जिन्हें एक बाद कृत्रिम अंग पहनाए जाएंगे।

डूंगरपुर, जालोर के अलावा संस्थान के 40 शाखा-आश्रमों में अन्नदान-वस्त्रदान कार्यक्रम आयोजित हुए। इसमें 5000 से अधिक जरूतमंदों तक सेवा पहुंची। शिविर संयोजक नरेन्द्रसिंह चौहान, हरिप्रसाद लढ्ढा एवं रोहित तिवारी थे। धन्यवाद मीडिया प्रभारी विष्णु शर्मा 'हितैषी' ने जबकि संचालन महिम जैन ने किया।

नया वर्चुअल गेस्ट एक्सपीरियंस सेंटर लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। लेक्सस इंडिया ने वर्चुअल डोम नामक अपनी तरह का पहला नया वर्चुअल गेस्ट एक्सपीरियंस सेंटर लॉन्च किया है।

लेक्सस इंडिया के प्रेसिडेंट, नवीन सोनी ने कहा कि इसका फोकस देशभर में वर्चुअली अपने मेहमानों तक पहुंचने पर है। वर्चुअल गेस्ट एक्सपीरियंस सेंटर को लेक्सस इंडिया की वेबसाइट पर होस्ट किया जाएगा जो लेक्सस ब्रांड और इसकी ऑफर्स को देश के हर हिस्से में स्थित समझदार लक्जरी उपभोक्ता के करीब लाएगा। लेक्सस इंडिया न केवल फिजिकल उपस्थिति के माध्यम से बल्कि विविध डिजिटल माध्यमों के माध्यम से अपने व्यापक अनुभव को बढ़ाना चाहता है और यह वर्चुअल जीईसी इस दिशा में एक बड़ा कदम होगा।

लाइफस्टाइल स्पेस बनाने के विजन के साथ, यह कॉन्सेप्ट वर्चुअल क्षेत्र में अपने मेहमानों के लिए आरामदेह और तल्लीन करने वाला अनुभव प्रदान करता है। डिजाइन ऐसे एलीमेंट्स से घिरा हुआ है जो समकालीन, सरल लेकिन समग्र हैं, जो शांति और आश्चर्य की भावना व्यक्त करते हैं। वर्चुअल गेस्ट एक्सपीरियंस सेंटर का आर्किटेक्चर बौद्ध वास्तुकला के प्रतीकात्मक गुंबद की व्याख्या को दर्शाती है, जो लेक्सस ब्रांड मूल्यों के अनुरूप एक शांत भावना पैदा करती है।

राजन को बालसाहित्य भूषण

आकोला (ह. सं.)। साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा द्वारा राजकुमार जैन 'राजन' को बालसाहित्य भूषण की उपाधि से समादृत किया गया। ज्ञातव्य है कि राजन की बाल साहित्य की लगभग 41 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। बालकों में पठन-पाठन की रुचि विकसित करने के लिए वे बीस वर्ष में विद्यार्थियों, विद्यालयों, बालकल्याण संस्थाओं तथा शोधार्थियों को अब तक ग्यारह लाख रुपये मूल्य से भी अधिक राशि का बालसाहित्य भेंट कर चुके हैं। संस्थान के अध्यक्ष पं. नरहरि ठाकर तथा प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा ने राजन को सम्मानित किया।

डॉ. वर्मा बेस्ट प्रोस्थोदोंटिस्ट ऑफ द इयर बने

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली डेंटल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट के प्रिंसिपल डॉ. निखिल वर्मा ने एशिया के सबसे बड़े वर्ल्ड डेंटल अवार्ड्स- 2022 के अंतर्गत मुख्य वक्ता के रूप में लेक्चर दिया। इसके अंतर्गत देशभर से आये दन्त चिकित्सकों का सम्मान किया गया। इनमें डॉ. वर्मा को बेस्ट प्रोस्थोदोंटिस्ट ऑफ द इयर के खिताब से नवाजा गया।

बाजार / समाचार

महावीर युवा मंच का संक्रांति मिलन समारोह आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। महावीर युवा मंच के लगभग 50 परिवारों का संक्रांति मिलन समारोह नाथूलाल डांगी के कुशाल बाग पर आयोजित हुआ। दिन भर चले इस कार्यक्रम में संक्रांति स्वरूप राखी सरूपरिया और अनिता नागौरी द्वारा साड़ी कपल गेम, हाऊजी गेम, मेमोरी गेम जैसे खेलपरक आयोजन हुए। साड़ी कपल गेम में अंकज-दीपशिखा पोरवाल प्रथम तथा भावेश-राशि सिंघवी द्वितीय रहे। मेमोरी गेम में दिलीप मोगरा, रमेश सिंघवी तथा विक्रम भंडारी क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे।

मंच संरक्षक प्रमोद सामर ने सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने पर सख्त नाराजगी जताते हुए मंच के सभी साथियों को अपने-अपने ढंग से विरोध व्यक्त करने को सचेत किया। साथ ही धार्मिक एवं आध्यात्मिक यात्रा करने का प्रस्ताव रखा जिस पर मंच अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत एवं महामंत्री हर्षमित्र सरूपरिया ने शीघ्र ही विस्तृत रूपरेखा बनाने का जिम्मा लिया। संध्या को समूहभोज का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का स्मरणीय संयोजन संजय-अनिता नागौरी ने किया।

भूजल डिस्चार्ज की तुलना में रिचार्ज प्रबंधन की जरूरत

उदयपुर (ह. सं.)। आज देश में भूजल चिंताजनक स्थिति में पहुंच गया है। भूजल का 85 प्रतिशत उपयोग उद्योग निर्माण एवं कृषि कार्यों में अधिक दोहन करने वाले आधुनिक संसाधनों के उपयोग से हो रहा है। अब केवल भारत में 28 प्रतिशत भूजल बचा है जो आने वाले 7 वर्षों में खत्म होने के कगार पर जा सकता है, क्योंकि अभी भी देश में भूजल रिचार्ज के लिए किए जाने वाले प्रयास बहुत कम है। ये विचार जलपुरुष मैगसेसे पुरस्कार विजेता राजेंद्र सिंह ने खोजयात्रा के दौरान व्यक्त किए। यह यात्रा सुखाड़ - बाढ़ विश्व जन आयोग द्वारा 25 दिसंबर से 3 जनवरी तक हुई।

बछार गांव में जन संवाद कार्यक्रम में ग्रामीणों ने क्षेत्र में किए गए जल संरक्षण कार्यों की जानकारी दी। महान सेवा संस्थान के राजेंद्र गामठ ने अतिथियों का स्वागत किया और संस्थान द्वारा किए गए विभिन्न जल संरक्षण कार्यों की जानकारी दी। इस पर राजेंद्र सिंह ने कहा कि आज के समय में भाग्यशाली और धनवान वही व्यक्ति है जिसके पास पानी है।

इसके बाद खोजयात्रा अलर्ट संस्थान के बगडुंदा, नाल, मोखी गांव पहुंची। संस्थापक बी. के. गुप्ता ने संस्थान द्वारा गोगुंदा अरावली पर्वतमाला क्षेत्र में विगत 3 दशकों में किये गए जल संरक्षण संबंधी कार्यों की जानकारी दी।

अध्यक्ष जितेंद्र मेहता ने बताया कि संस्थान ने जल संरक्षण के लिए कई धोरों को सुधारा है। नाड़ियां तैयार की और एनीकट बनाकर जल को रोका जिससे किसानों को जल उपलब्ध हुआ है और खेती की पद्धतियों में भी सुधार आया है।

राजेंद्र सिंह ने कहा कि इस तरह के प्रयास दुनिया में सभी जगह करने की आवश्यकता है क्योंकि कम लागत एवं पारंपरिक तरीकों से ही जल बचाना अधिक स्थाई होता है। खेत का पानी खेत में, गांव का पानी गांव में रोकना होगा तभी गांव आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सकते हैं। आज प्रकृति से ही गांव में समृद्धि लाने के तरीके ढूंढ़ने की जरूरत है। हर घर में बीज भंडार, खुद के खाद बनाने आदि के कार्य करने होंगे और केंद्रीय कृत जल प्रणाली को अपनाना होगा। नदी तालाब पर भूमाफिया लोग कब्जा कर चुके हैं और वे विलुप्त प्राय होते जा रहे हैं। उन्हें बचाकर पुनर्जीवित करना होगा तभी सभी को जल उपलब्ध हो सकेगा।

यात्रा में ललित जोशी, मनीष शर्मा, चतरसिंह, डॉ. इंदिरा खुराना, अशोक खुराना, पारस आदि मौजूद थे।

ताजमहल नहीं, धार्मिक स्थल, स्थापत्य भारतीयता की पहचान : डॉ. पाण्डेय

उदयपुर (ह. सं.)। प्रेयसी की याद में बना ताजमहल भारत की पहचान नहीं है, भारतवर्ष की पहचान तो हमारे धार्मिक स्थलों, मंदिरों मठों, पवित्र स्थलों के स्थापत्य द्वारा परिलक्षित होती है। धार्मिक स्थलों, मंदिरों को अगर भौगोलिक पुरातात्विक सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह महज केवल धार्मिक विचारधारा को प्रतिबिंबित करने का कार्य नहीं करते अपितु भारतीय धार्मिक पक्षों और धार्मिक दर्शन जो कि वैज्ञानिकता पर आधारित है, उसे इतिहास से जोड़ते हुए अपनी सहजता और सरलता से संपूर्ण विश्व के मंगल की कामना कर प्रेम और एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करते हैं। ये विचार जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुंद पाण्ड्ेय ने व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विवि वाराणसी के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दीनबंधु पाण्डे ने कहा कि भारत मात्र 1947 के बाद का भारत नहीं है। भारत हिमालय से लेकर दक्षिण तक फैले उस भूभाग का भारत है जिसकी संस्कृति, संस्कार और मूल्य हजारों वर्षों में बनी विस्मृत करने वाली संरचना है जिसका अस्तित्व गौरवशाली था, है और रहेगा। प्रो. पांडे ने पं. मदनमोहन मालवीय के दर्शन के संदर्भ में ज्ञान को समझाते हुए कहा कि शिव ही ज्ञान का स्रोत है और शिव ही ज्ञान का आधार भी है।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि हमारे मंदिर और धार्मिक स्थल महज हमारी आस्था का केंद्र नहीं हैं। ये भारतीय इतिहास, ज्ञान, स्थापत्य और भारतीय वैदिक विज्ञान के एक संगम हैं। पुरातन और सनातन ज्ञान को सहेजना, संभालना, संकलित, संग्रहित और संरक्षित करना हमारा धर्म है। हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ भावी पीढ़ी को भी भारतीय धार्मिक विभिन्नता और उसके तथ्यों से परिचित करवाएं। कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय जानी ने कहा कि अभारतीय विचारधारा को मानने वालों ने राष्ट्र को तोड़ने का भी प्रयास किया है किंतु इस प्रकार की संगोष्ठियों के माध्यम से भारतीय विचारधारा और धार्मिक संस्कारों को बल मिलेगा।

मावली विधायक धर्मनारायण जोशी ने कहां कि स्वतंत्रता पूर्व के शासनकालों में भारतीय ज्ञान और संस्कारों को खंडित करने और भारतीय विचारधारा के शोषण का कार्य किया गया। परिणामस्वरूप हमारी पूरी पीढ़ी महान भारतीय विचारधारा, ज्ञान संस्कारों को उस रूप में ग्रहण नहीं कर पाई जिस रूप में उसको करना चाहिए था। जोशी ने ब्रिटिश काल के दौरान की शिक्षा पद्धति पर प्रश्न उठाते हुए मातृभाषा शिक्षण की वकालात की। उन्होंने कहा कि भारतीय इतिहास के साथ जो छेड़छाड़ हुई है, इतिहास में जो भ्रांतियां घर कर गई हैं उनको दूर करना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में सभी को प्रयास करके भारतीय संस्कृति और संस्कारों को हर एक भारतीय तक पहुंचाना होगा ताकि अखंड भारत और विश्व गुरु भारत का गौरव एक बार पुन: विश्वपटल पर आलोकित हो सके। संगोष्ठी में अतिथियों द्वारा 'हिंदू धर्म के पवित्र स्थलों का उद्भव एवं ऐतिहासिक पुरातात्विक एवं धार्मिक स्थापत्य के आलोक' विषयक स्मारिका का विमोचन किया गया। संगोष्ठी में प्रो. आनंदशंकर सिंह, डॉ. अनिलकुमार, डॉ. देव कोठारी, प्रो. जीवनसिंह खरकवाल, प्रो. गिरीशनाथ माथुर, छगन वोहरा, प्रो. अतुल त्रिपाठी, प्रो. पीयूषकांत शर्मा, डॉ. हर्षा, डॉ. रमा देवी, डॉ. मनीष श्रीमाली, डॉ. विवेक भटनागर, डॉ. मनीष श्रीमाली, जेके ओझा, जीएल मेनारिया, प्रतिभा, प्रो. सीताराम दूबे सहित कई विज्ञ उपस्थित थे। संचालन डॉ. हेमेन्द्र चौधरी, डॉ. कुलशेखर व्यास ने जबकि आभार डॉ. हेमशंकर दाधीच ने ज्ञापित किया।

एशियन पेंट्स एपेक्स अल्टिमा प्रोटेक के नये विज्ञापन में रणबीर का डबल रोल

उदयपुर (ह. सं.)। रणबीर कपूर ने एशियन पेंट्स एपेक्स अल्टिमा प्रोटेक के नए अनूठे विज्ञापन में एक जादूगर और कॉन्ट्रैक्टर का डबल रोल निभाया है। एशियन पेंट्स एपेक्स अल्टिमा प्रोटेक, अपनी लैमिनेशन गार्ड टेक्नोलॉजी के साथ, घर की बाहरी दीवारों को बारिश, धूप और धूल से पूरी सुरक्षा देता है। साथ ही दस साल की परफॉर्मेंस वारंटी की भी पेशकश करता है। अल्टिमा प्रोटेक के लिए नया विज्ञापन ओगिल्वी इंडिया ने परिकल्पित किया है और जाने-माने डायरेक्टर, अभिनय देव ने इसका निर्देशन किया है।

अमित सिंगल, एमडी एवं सीईओ, एशियन पेंट्स लि. ने कहा कि यह सीधी सी सोच हमेशा से रही है कि लोग सबसे ज्यादा कीमती चीजों को लंबे समय तक रखने के लिए उन्हें लैमिनेट कराते हैं और हमारे घर सबसे बेशकीमती होते हैं। जब आप एशियन पेंट्स अल्टिमा प्रोटेक का इस्तेमाल करते हैं तो आप सिर्फ पेंट नहीं करते, बल्कि मौसम की अलग-अलग परेशानियों से लड़ने के लिए उसे लेमिनेट कराते हैं। सुकेश नायक, चीफ क्रि एटिव ऑफिसर, ऑगिल्वी इंडिया ने कहा है कि एशियन पेंट्स का अल्टिमा प्रोटेक लैमिनेशन वाला एक्स टीरियर पेंट का पर्याय रहा है। हमारा नया कैम्पेन इस सहयोग को आगे और मजबूती देता है।

एचडीएफसी बैंक का शुद्ध लाभ 12,259 करोड़

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक का दिसंबर, 2022 तिमाही का शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 18.5 प्रतिशत वृद्धि के साथ 12,259 करोड़ रु. रहा। बैंक की ओर से घोषित तीसरी तिमाही के वित्तीय नतीजों के अनुसार आलोच्य तिमाही में उसकी शुद्ध व्याज-आय सालाना आधार पर 24.6 प्रतिशत बढ़कर 22,988 करोड़ रुपये रही। इसी दौरान बैंक का शुद्ध राजस्व 18.3 प्रतिशत बढ़ कर 31,487.7 करोड़ रु. रहा। बैंक की मुख्य शुद्ध ब्याज मार्जिन 4.1 प्रतिशत और ब्याज अर्जित करने वाली परिसम्पत्तियों पर शुद्ध व्याज मार्जिन 4.3 प्रतिशत रही।

शुद्ध ब्याज आय में मजबूत वृद्धि और एनपीए आदि के कारण नुकसान कम होने से बैंक का परिचालन लाभ सालाना आधार पर 13.4 प्रतिशत बढ़कर 19,024 करोड़ रु. रहा । आलोच्य तिमाही में फसे कर्जो और आकस्मिकताओं के लिए प्रावधान पिछले साल इसी तिमाही की तुलना में 6.3 प्रतिशत घटकर 2,806 करोड़ रु. रहा। तीसी तिमाही के अंत में बैंक की सकल गैर-निष्पादित संपत्ति (एनपीए) 1.23 प्रतिशत थी। एक साल पहले एनपीए का अनुपात 1.26 प्रतिशत था। समीक्षाधीन तिमाही में शुद्ध एनपीए 0.33 प्रतिशत थी, जबकि एक साल पहले इसी तिमाही में 0.37 प्रतिशत थी। बैंक के अनुसार 31 दिसंबर, 2022 में उसका पूंजी पर्याप्तता अनुपात 17.66 प्रतिशत था, जबकि एक तिमाही पहले यह 16.92 प्रतिशत और एक साल पहले 19.53 प्रतिशत था।

प्रतीकों में जीता.....

(पृष्ठ एक का शेष)

चित्तौड़ में हुए सत्रह जौहर में अंतिम जौहर के कल्लाजी साक्षी थे। युद्ध के बाद वे कुलदेवी नागणेचिया की आराधना में लग गये। गुरू भैरव की विशेष कृपा से जगदम्बा ने दर्शन देकर वरदान दिया कि लड़ते समय कभी पीछे मुड़ नहीं देखना पर वे वरदान भूल गये। अपनी गलती का एहसास होने पर लाखोटिया की बारी पहुंच अपने हाथों से देवी को शीश चढ़ा दिया। सिर विहीन कल्लाजी अपने रूंड के बल दुश्मनों को खदेड़ते ठेठ सलूम्बर के आगे पहुंचे और अंत में जहां उनका रूंड गिरा वहां रूंडेला नामक गांव बसा जो आज भी अस्तित्व में है।

देवी कल्लाजी को पांच फणी नाग योनी प्रदान की। वर्तमान में राजस्थान सहित अन्य प्रांतों में कल्लाजी के 900 स्थानक, देवल, मंदिर हैं जहां पांच फणी सर्प के रूप में उनकी पूजा होती है। इनका विचरण अन्तरिक्ष, पृथ्वी और पाताल तीनों लोकों में है। इसी प्रकार जैनियों के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ नौ फण लिये हैं।

बालिकाओं का श्राद्धपक्षीय सांझी व्रतानुष्ठान गोवरांकनों को विविध रंगी फूलों से सजाने का बड़ा ही अनुपम उत्सव है। सांझी की यथार्थ कल्पनाजनित कथाएं अंत में कोट के रूप में उसकी विदाई दिखाती हैं। जैन दर्शन पर आधारित जैसा कर्म वैसा फल की प्राप्ति को लेकर खोटे कर्म करने वालों की नारकीय पीड़ा के कई दृश्य चित्रों के माध्यम से व्यक्ति को सत्कर्म की ओर प्रेरित करते हैं। सर्वत्र मनुज ने विविध लोकों की कल्पना तो की पर वहां तक पहुंच नहीं होने के कारण उन लोकों के निवासियों के जीवनचक्र को अपने मन के भावों में बड़े ही मनोरम ढंग से प्रतिरोपित किया।

इतना सबकुछ जानने के बाद भी हमारी सामर्थ्य उस सबकुछ का अल्पांश भी नहीं जान पाता है। लगता है, पूरी सृष्टि का जड़-चेतन समस्त रूप ही प्रतीकात्मक प्रतिरूप लिए है। मनुष्य ने प्रकृति-सृष्टि के हर उपादान को अपना प्रतीक मान उसके साथ अपने रागात्मक संबंध का निर्वाह किया है।

बालकवि वैरागी.....

(पृष्ठ दो का शेष)

और यह आखिरी 19 जून 2017 का सुरक्षित पत्र जिसमें लिखा-

परमानंदी आदरणीय

भाईश्री महेन्द्रजी भानावत

सादर प्रणाम

सामाजिक सहजता और शांति लौट रही है। प्रशासन की मूर्छा अभी भी विचारणीय है। किसानों की बेचैनी और घबराहट तथा चिंता समाप्त नहीं हुई है। आत्महत्याएं अनवरत हैं। राम ही हमारा रखवाला है।

और सब ठीक ही मानो। आशा है, स्वजन, परिजन सानंद ही होंगे। सभी को मेरा सविनय प्रणाम कहें।

परसों बैंगलोर से एक अज्ञात मित्र का फोन आया। उसने आपका संदर्भ देकर वही दोहा मुझे फोन पर सुनाया। 'बाबाजी के ठाठ' वाला। अब उसे नया यूं लिखो-

बिछुड़ गये जांगीड़ और बिछुड़ गये सब जाट।
बाबाजी भी हो गये, बिलकुल बारा बाट।।

पहले वाला दोहा यह था जो उन्होंने मुझे लिखा था-

इक्क तरफ जांगीड़ है, इक्क तरफ है जाट।
दोनों के ही बीच में, बाबाजी के ठाठ।।

'धापूधाम' और उसके आसपास वाले दोनों मकान बिक गये। जांगीड़ और जाट ने नीमच में नये मकान खरीद लिये। बाबाजी मनासा आ गये।

भाई

बालकवि वैरागी

वैरागीजी का निधन 13 मई 2018 को हुआ। उन पर उनके अनन्य साथी डॉ. पूरन सहगल ने 'वामन से विराट, बालकवि वैरागी' नाम से एक पुस्तक लिखी। इसे संयोग कहिये कि सहगलजी की पत्नी का निधन भी वैरागीजी से पूर्व उसी वर्ष की 13 जनवरी को हुआ।

यह पुस्तक सहगलजी ने मुझे भेजी जिसके प्रारंभ में ही उन्होंने लिखा- ''दादा बालकवि वैरागीजी पर किताब लिखना अर्थात् आकाश नापना! आकाश को तो वामन अवतारी विष्णु भी नहीं नाप सके थे। यदि नाप सके होते तो वे बलि के सिर पर पैर रखने की बजाय आकाश नाप लेते। उस वामन के अलावा मैं चार वामन अवतारों को और भी जानता हूं जिन्होंने पृथ्वी ही नहीं नापी बल्कि आकाश नापने का भी पूरा प्रयास किया। उनमें से एक हैं लालबहादुर शास्त्री, पंडित रामनारायण उपाध्याय जिन्हें दादा ने 'रामा दादा' संबोधन देकर उनके नाम तक को वामन कर दिया। तीसरे डॉ. महेन्द्र भानावत और फिर स्वयं दादा बालकवि वैरागी। इन सबने अपने-अपने संघर्षों के बलबूते आकाश तक को नापने का केवल प्रयत्न ही नहीं किया बल्कि नापकर भी दिखा दिया।'' - अनुभूति, पृ. 5

कहना नहीं होगा, वैरागीजी सचमुच में वि-रागी वरतरागी ही थे।

आजादी, समस्या, समाधान और जनचेतना की सोच

- डॉ. उषा वर्मा-

हमारा अज्म इतना बुलंद है कि पराये शोलों का डर नहीं।
हमें खौफ आतिशे गुल से है वो कहीं चमन को जला न दें।।

'सम्हल के रहना अपने घर में छिपे हुए गद्दारों से' वाली बात आज सही लग रही है। क्योंकि भारत आज जिस मुकाम पे खड़ा है वहां स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयन्ती एक औपचारिक जलसा भर या समारोह से अधिक कुछ नहीं है।

हम अपनी स्वाधीनता का अमृत दिवस मना रहे हैं। यहां तक पहुंचते हुए देश में बहुत बदलाव आया है और भविष्य में बहुत कुछ और बदलाव आने वाला है लेकिन गौरवमयी संस्कृति, रामराज्य का, स्वर्णयुग का अगुआ भारत जिस पर हम दिल से गर्व करते हैं, वह भारत कहां विलुप्त हो गया? दु:ख तो इस बात का है कि देश सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक चेतना के स्तर पर पतनशील ही हुआ है।

अपनी जनधर्मिता के अभाव में अपने संकीर्ण स्वार्थपरक नजरिये के कारण हर ओर विकास के पीछे विनाश की आंधी है। हमारी आजादी, हमारी संस्कृति और जनधर्मिता को मनसा, कर्मणा तथा वाचा स्वीकार करने वाले सत्ताधीश क्या सच में आजादी का अर्थ 'जीओ और जीने दो' का मतलब समझ पाये हैं? परम्परा को निभाते एवं आजादी का परचम लहराते हुए और तामझाम के साथ जश्न मनाते हुए कहां-से-कहां पहुंच गये हैं। आजादी के हसीन वायदों ने आमजन को कहां-से-कहां पहुंचा दिया है।

यह आजादी, यह कुर्सी और यह सत्ता आमजन के कारण ही मिली है। उसे क्या मिला? रोटी, कपड़ा और मकान जैसी प्राथमिक सुविधाएं भी मिलीं? उसकी आशाओं एवं तमन्नाओं की मनचाही मंजिल मिली? भाई-भाई के खून से रंगकर आजादी का जो यह परचम लहराया उसके गम को भुलाकर हम आजादी के जश्न में दो-तीन दशक तक आशान्वित होकर डूबे रहे। सैकड़ों वर्षों बाद, लाखों लोगों की कुर्बानी के बाद मिली आजादी के योद्धाओं को श्रद्धा-सुमन ही अर्पित नहीं किया बल्कि उनके वायदों को निभाने का प्रयास करते रहे।

गांधी, सुभाष, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद सरोखे न जाने कितने दीवानों ने कुर्बानियां दीं। उनकी कुर्बानियों ने हमें संकल्पित किया- 'हम लाये हैं तूफान से कश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्हाल के' पर क्या हुआ उनके वादों का? उनके सपनों को हम, आप और तथाकथित सत्ताधारी दल कहां तक पूरा कर पाये?

हम भारतवासी आशाओं की किरण से चकमक आंखों में सुख-सौरभ के सपने लिये आजादी के सम्मोहन-सुख में डूबे रहे, कारण कि हमारे हृदय में उन महान स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अटूट आस्था और विश्वास था। न जाने कितने महान देशभक्त और महान विभूतियां हममें कर्त्तव्यबोध जगा कर कह रही थी, यह देश मात्र सत्ताधीशों का नहीं बल्कि करोड़ों देशवासियों का है।

आज सच में देखा जाय तो लोकतंत्र की असली परिभाषा है- लोकतंत्र बनाम राजतंत्र और नेता बनाम राजा। जनता के लिए जनता का, जनता के द्वारा शासन तो संविधान में बन्द है। मेहनत कोई करे फल कोई लूटे। सबकुछ वोट की राजनीति है। चुनाव के समय जनता के सेवक और चुनाव जीतने के पश्चात राजा।

अच्छे दिन आने वाले हैं का भ्रमजाल बुनने वाले ये किसी से कम नहीं हैं। मीठे भाषणों के पीछे चल रही हैं छुरियां। सच तो यह है कि लोकतंत्र पूंजीवादी तंत्र में तब्दील होता रहा तो जनतांत्रिक मूल्यों का, आमजन की जिन्दगी का, वर्तमान व भविष्य सबका अस्तित्व खतरे में घिरा दिखता है।

सोचने पर लगता है, नेताओं के वायदे, उनकी घोषणाएं, संविधान में दर्ज जनता के अधिकार और कर्त्तव्य, योजनाएं-परियोजनाएं, आमजन के लिए सब बेमानी हैं। दिवास्वप्न हैं। अमीर और अमीर, गरीब और गरीब की कोई सीमा नहीं। लाखों करोड़ों, मध्यवर्गीय जन, गरीब जन, दलित जन तथा आदिवासी जन की समस्या किसी को त्रस्त नहीं कर पा रही है। सरकार की आंखें, देखकर भी नहीं देखना चाहतीं। प्रशासन को फिक्र नहीं। ऐसे में आज भी सामंती मुगालता ही कायम है। आती-जाती सरकारें नित नयी घोषणायें, अच्छे दिन के सपने तो दिखाती हैं किन्तु क्या वे सबके सपनों को फलीभूत कर पाती हैं?

'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुल बुले हैं इसकी ये गुलिश्तां हमारा'; इतने दशकों बाद भी क्या ये गुलिश्तां सबके लिए हरा-भरा हो पाया? जनता अच्छे नेता नहीं चुन सकती तो कम-से-कम बुरे नेताओं द्वारा हो रही क्षतियों से बच तो सकती है। जनता कहीं इस्तेमाल होती है तो कहीं तमाशायी बनी रह जाती है।

हम देख रहे हैं, झोंपड़पट्टियों को, उनकी बदहाल जिन्दगी को जिनके वोट से इन्हें नेता कहलाने का अवसर मिलता है। सरकार इनके लिए बहुत कुछ करने की बात करती है। घर, रोटी, कपड़ा सब देने का वादा करती है। गरीबों का मसीहा होने का दावा करने वाली सरकार क्या दे पाती है? झोंपड़पट्टियों को उजाड़कर पांच सितारा होटल, मॉल, सिनेमाघर और जाने क्या कुछ बनाये जा रहे हैं। इस तरह एक तरफ बदहाल, अभावग्रस्त जीवन की वास्तविकता है तथा दूसरी ओर आर्थिक समृद्धि आसमान छू रही है।

आजादी के बाद बदलती अर्थव्यवस्था के आइने में झांकें तो हमारे सामने देश-समाज तथा जनतान्त्रिक मूल्यों की न जाने कितनी परतें निर्वस्त्र होकर खड़ी हो जाती हैं। जनजागृति के अभाव में ताकतवर लोग और भी ताकतवर बनते जा रहे हैं। प्रशासन, पुलिस, न्यायालय से यदि हम अपनी सुरक्षा, अपने हक की मांग करते हैं तो वहां भी ताकतवरों का ही साथ दिया जाता है। उपभोक्ता के रूप में विकास की बात करते हैं जो आज सबकुछ विदेशी ब्राण्ड को महत्त्व दिया जाता है। हल्दी से लेकर क्रीम, पाउडर आदि बच्चों के खिलौने तक विदेशी मिलते हैं। देशी उद्योग, फुटकर दुकानदार कहां जायें? पैसे वाले के लिए बाजारवाद की सम्मोहक दुनिया में आकर्षक का जादुई पिटारा है।

सरकार कहती है, मध्यवर्गीय उपभोक्ताओं के लिए सिंहद्वार है। तिरंगा लहराते हुए, जश्न मनाते हुए, राष्ट्रप्रेम के गीत गाते हुए, रसभरी जलेबियों का स्वाद लेते हुए चाहे हम समारोहों में क्षणिक आनन्द उठा लें पर सच तो यह है कि आम आदमी के अभावग्रस्त जीवन के टुकड़े-टुकड़े सपनों की मर्म कथा का अन्त नहीं। भारत के नौजवान डिग्रियों का पुलिन्दा लिए नौकरियों के लिए दर-दर भटकते फिर रहे हैं।

पैसे और पैरवी के अभाव में अच्छे अंकों के बावजूद ऊंची शिक्षा के लिए शिक्षा-प्रतिष्ठानों का दरवाजा खटखटाते, कर्ज में डूबे नित आत्महत्या करते किसान, देह-शोषण से पीड़ित लड़कियों की व्यथा रोज हजारों प्रश्न लेकर हमारे सामने खड़ी हैं और हम आजादी का औपचारिक जश्न मनाते हुए, ध्वज वन्दना करते हुए, संविधान में दर्ज अधिकारों, प्रतिज्ञाओं को दुहराते समवेत स्वर में आजादी के गीत कब तक गाते रहेंगे?

जिंक फुटबॉल अकादमी के दो खिलाड़ी राष्ट्रीय शिविर हेतु चयनित

उदयपुर (ह. सं.)। जिंक फुटबॉल अकादमी के फॉरवर्ड जंगमिनथांग हाओकिप और आशीष माल्या को गोवा में चल रहे हीरो अंडर-17 यूथ कप में शानदार प्रदर्शन के बाद गोवा में भारत के अंडर-17 राष्ट्रीय शिविर के लिए चयनित किया गया है।

वेदांता-हिंदुस्तान जिंक की सीएसआर पहल के तहत् संचालित जिंक फुटबॉल अकादमी ने सभी मैच जीतने और हीरो यू-17 यूथ कप के अगले दौर के लिए क्वालीफाई कर अपने श्रेष्ठ खेल का प्रदर्शन किया। जिंक फुटबॉल अकादमी ने शीर्ष भारतीय युवा क्लब बेंगलुरु एफसी, एफसी गोवा, चर्चिल ब्रदर्स एफसी और एआरए एफसी को हराया, जहां जंगमिनथांग और आशीष ने टीम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके बेहतरीन प्रदर्शन के लिये जंगमिनथांग और आशीष को गोवा में राष्ट्रीय शिविर में चयनित किया गया जहां एएफसी एशियन कप की तैयारी की जा रही है। इससे पूर्व, जिंक फुटबॉल अकादमी के गोलकीपर साहिल पूनिया एसऐऐफऐफ चैंपियनशिप और एफसी एशियन कप क्वालीफायर में भारतीय फुटबॉल टीम के लिये चुने गये हैं।

PIMS

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

SUPER SPECIALITY DEPARTMENTS

- CARDIOLOGY
- CARDIO THORACIC AND VASCULAR SURGERY
- HAND & RECONSTRUCTIVE MICROSURGERY
- GASTROENTEROLOGY AND HEPATOLOGY
- PLASTIC, BURN & COSMETIC SURGERY
- NEUROLOGY
- NEURO SURGERY
- NEPHROLOGY
- PEDIATRIC SURGERY
- UROLOGY

Goverment schemes at PIMS: चिरंजीवी मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना | RGHS Rajasthan Government Health Scheme | प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना PM-JAY | जननी सुरक्षा योजना

Phone : 0294-3010000, 8696440666 | Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in | Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in

FIND YOUR FUTURE

SAI TIRUPATI UNIVERSITY UDAIPUR

SAI TIRUPATI UNIVERSITY
UMARDA, UDAIPUR
Approved under Section 2(f) of UGC Act 1956

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Approved by NMC
M.B.B.S. (4.5 Years + 1 Year Internship)
MD/MS (3 Years)
M.Sc. in Medical Sciences [Non-Clinical] (3 Years)

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING
Approved by INC
G.N.M. (3 Years)
B.Sc. Nursing (4 Years)
- Medical Surgical
- Community Health
- Child Health (Pediatrics)
- Mental Health (Psychiatrist)
- Obstetric & Gynaecological

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
Approved by PCI
- D.Pharm. (2 Years)
- B. Pharm. (4 Years)

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
- B.P.T. (4.5 Years)
- M.P.T. (2 Years)

VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY & MASS COMMUNICATION
Fashion Designing, Interior Designing
- Diploma
- B.Voc.
- B.Des.
- Advance Diploma
- M.Voc.
- M.Des.

Fine Arts - BFA, MFA

Journalism & Mass Communication
- D-JMC
- BA-JMC
- MA-JMC

VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT
MBA (Hospital Administration & Health Care Management)

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCE
Diploma (2 Years) Approved by RPC
- Radiation Technology
- ECG Technology
- Operation Theater Technology
- Cath Lab Technology
- Medical Laboratory Technology

RESEARCH PROGRAM
Ph.D.(Nursing and Non-Clinical Medical Sciences)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in | Phone: 9587890082, 9358883194

Umarda Railway Station Road, Umarda, Udaipur-313015 (Raj.)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।